लखनऊ

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

मंगलवार, 2 जून, 2026
वर्ष : 11 । अंक: 276
मूल्य : 1 रुपये
पृष्ठ : 8

UPHIN/2014/57034

. आजकल हाथ जोड़ना ही नहीं बड़ो से बात करते समय मोबाइल ना चलाना भी बहुत बड़ा सम्मान है।

TODAY WEATHER

DAY 42° Hi | NIGHT 29° Low

दोस्ती की आड़ में छुरेबाजी मंजूर नहीं, गाजियाबाद के सूर्या हत्याकांड पर बिजनौर में भड़के मुख्यमंत्री योगी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बिजनौर के अफजलगढ़ में एक जनसभा को संबोधित करते हुए बड़ा बयान दिया है। उन्होंने सूर्या चौहान हत्याकांड पर बोलते हुए कहा कि धर्म की स्थापना के लिए सुदर्शन चक्र जरूरी है। तभी ये देश सुरक्षित रहेगा। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि सूर्या को दोस्ती के नाम पर धोखा दिया गया। बकरीद पर उसके साथ गलत हरकत की गई, जिसके बाद पुलिस ने अपना काम किया।

योगी ने कहा कि दोस्ती की आड़ मे छुरेबाजी स्वीकार्य नहीं है। कोई अपनी नालायक 'औलाद' को समझा नही पा रहा तो समझो गलती कर रहा है। ये उसकी सबसे बड़ी चूक है और उसे

सजा मिलेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार की संवेदनाएं हमेशा सामान्य और कानून का पालन करने वाले नागरिकों के साथ हैं। अगर कोई कानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने की कोशिश करेगा तो उसे किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

पाकिस्तान से आए 1645 परिवारों को जमीनों पर दिया कब्जा

इससे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पाकिस्तान से विस्थापित परिवारों, पूर्व सैनिकों और पट्टेदारों को भूमि स्वामित्व अधिकार प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने पाकिस्तान से विस्थापित 1645 परिवारों एवं पूर्व सैनिकों/लीजधारकों को भूमिधरी अधिकार पत्र बांटे। इसके बाद उन्होंने जनसभा को संबोधित किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पाकिस्तान से आए हुए जिन परिवारों की पुश्तैनी संपत्तियों पर कब्जा किया गया था, दशको बाद भी उन्हें न्याय नहीं मिला। चौथी पीढ़ी में हमने उन विस्थापित परिवारों को उनकी जमीनों का मालिकाना हक दिया है। इनकी संख्या 1645 है यानी कुल मिलाकर 8 से 10 हजार लोगों को आज ये कागजात प्राप्त हो रहे हैं। प्रदेश सरकार ने इन परिवारों को उनका हक दिया।

> मैंने अभी हाल ही में सुना है कि कुछ मौलवी-मौलाना मांग कर रहे थे कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कर दिया जाए, उनको बता दूं कि गाय हमारी माता है, जन्म-जन्मांतर का नाता है। मां और पुत्र के बीच में कुछ घोषित करने की आवश्यकता नहीं है। यह हमारे संस्कार हैं, हमने अपनी मां के बारे में जो सम्मान का भाव रखते है, उसी भाव से हमने गाय को माता माना है'।
>
> **मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ**

सामने अगर राक्षस है तो शस्त्र उठाना जरूरी

मुख्यमंत्री ने महाभारत और विदुर के बारे में बात करते हुए कहा कि भारतीय परंपरा और संस्कृति हमेशा धर्म की रक्षा का संदेश देती रही है। सामने अगर खरदूषण (राक्षस) है तो शस्त्र उठाना होगा। उन्होंने कहा कि जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। यह धरती इतिहास को बनते और बिगड़ते दोनों रूपों में देख चुकी है, इसलिए समाज को सही और गलत के बीच स्पष्ट अंतर समझना होगा। साथ ही देश के खिलाफ विद्रोह करने वालों के खिलाफ लड़ना होगा। क्योंकि लड़कर ही इन्हें हराया जा सकता है।

प्रदेश में गोहत्या के खिलाफ सख्त कानून लागू

गोवंश संरक्षण के मुद्दे पर भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कुछ लोग गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की बात करते हैं, लेकिन साथ ही उसे केवल एक पशु के रूप में संबोधित करते हैं। प्रदेश सरकार गोवंश संरक्षण को लेकर हर काम कर रही है। योगी ने कहा कि भारत में गौमाता के प्रति श्रद्धा और सम्मान की परंपरा सदियों पुरानी है। उन्होंने दोहराया कि उत्तर प्रदेश में गोहत्या के खिलाफ सख्त कानून लागू हैं और सरकार इस विषय पर किसी प्रकार की ढिलाई नहीं बरतती। गो हत्या में लिप्त लोगों के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही है।

संक्षेप

'पीठ में छुरा या वफादारी का कत्ल?'... मंत्री ज़मीर अहमद खान के कथित ऑडियो लीक से हिली कांग्रेस

नई दिल्ली, एजेंसी। कर्नाटक में एक तरफ कांग्रेस पार्टी पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता के शीर्ष पर पहुंचने का जश्न मना रही है और 3 जून को होने वाले डी.के. शिवकुमार के भव्य शपथ ग्रहण समारोह की तैयारियों में जुटी है, वहीं दूसरी तरफ पार्टी के भीतर से वफादारी और विश्वासघात की एक ऐसी खौफनाक कहानी सामने आई है जिसने आलाकमान की नींद उड़ा दी है। कैबिनेट गठन की चर्चाओं के बीच एक कथित ऑडियो क्लिप सोशल मीडिया पर जंगल की आग की तरह वायरल हो रही है, जिसने कांग्रेस खेमे में भारी असंतोष और हड़कंप मचा दिया है। इस लीक ऑडियो में कथित तौर पर राज्य के कद्दावर नेता और मंत्री बी. ज़मीर अहमद खान को दावणगेरे दक्षिण विधानसभा सीट के उपचुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार को ही हराने की गुप्त साजिश रचते हुए सुना जा सकता है। मुस्लिम टिकट न मिलने से नाराजगी: 'अपनों' की पीठ में छुरा? मंत्री ज़मीर अहमद खान को निवर्तमान मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का बेहद करीबी और वफादार सिपहसालार माना जाता है। लेकिन राजनीतिक गलियारों से आ रही खबरों के मुताबिक, वह कांग्रेस के उस फैसले से अंदर ही अंदर बेहद नाखुश और आक्रोशित थे, जिसमें दावणगेरे दक्षिण उपचुनाव के लिए किसी भी मुस्लिम उम्मीदवार को टिकट नहीं दिया गया था। यह उपचुनाव कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शमनूर शिवशंकरप्पा के निधन के बाद खाली हुई सीट पर कराया गया था। टिकट वितरण से निराश होकर, खान ने कथित तौर पर कांग्रेस की घोषित नीतियों के विपरीत जाकर कट्टरपंथी रुख रखने वाली सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया के उम्मीदवार अफ़सर कोडलीपटे को गुप्त रूप से समर्थन देने का मन बना लिया।

सत्ता गंवाने के बाद टीएमसी में महा-विद्रोह: ममता बनर्जी ने पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए दो विधायकों को निकाला

कोलकाता, एजेंसी। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 में सत्ता से बाहर होने के बाद तृणमूल कांग्रेस के भीतर सुलग रही असंतोष की आग अब खुलकर सामने आ गई है। पार्टी आलाकमान ने कड़ा रुख अपनाते हुए सोमवार को अपने दो मौजूदा विधायकों— संदीपान साहा और ऋतब्रत बनर्जी को पार्टी विरोधी गतिविधियों में लिप्त होने के आरोप में तत्काल प्रभाव से निष्कासित कर दिया है। इस बड़ी कार्रवाई ने उन अटकलों पर मुहर लगा दी है कि चुनाव में करारी हार के बाद पार्टी नेताओं और विधायकों का एक बड़ा धड़ा ममता बनर्जी के नेतृत्व से नाराज चल रहा है और तृणमूल के भीतर एक बड़ा बिखराव शुरू हो चुका है। टीएमसी द्वारा जारी एक आधिकारिक और सख्त बयान के अनुसार, इन दोनों विधायकों के खिलाफ कार्रवाई की तात्कालिक वजह पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी के कालीघाट स्थित आवास पर रविवार को बुलाई गई एक महत्वपूर्ण आपातकालीन बैठक रही। 2026 के चुनावी नतीजों के बाद पार्टी के भविष्य और रणनीति को लेकर बुलाई गई इस समीक्षा बैठक से संदीपान साहा और ऋतब्रत बनर्जी, दोनों ही नदारद रहे।

'गलती सीबीएसई की, सजा बच्चों को' : री-इवैल्यूएशन फीस पर राहुल गांधी का सवाल

नई दिल्ली, एजेंसी। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सोमवार को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की परीक्षा परिणामों के बाद लागू फीस व्यवस्था को लेकर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि स्कैन कॉपी, री-टोटलिंग और री-इवैल्यूएशन के लिए छात्रों से शुल्क लिया जा रहा है, जबकि कई मामलों में त्रुटियां खुद बोर्ड की प्रक्रिया में होती हैं।

सोशल मीडिया मंच एक्स पर राहुल गांधी ने लिखा कि जेबकतरों से सावधान रहें, आज वे सीबीएसई के अंदर बैठे हैं। अगर सीबीएसई की गलती से अंक गलत आ जाएं तो आपको क्या मिलता है? एक बिल। डिजिटल स्कैन कॉपी के लिए 100 रुपये प्रति विषय, री-टोटलिंग के लिए 100 रुपये प्रति पेपर और री-

इवैल्यूएशन के लिए 25 रुपये प्रति प्रश्न। उन्होंने कहा कि एक छात्र को अपनी आंसर सीट की सही जांच करवाने के लिए 2,000 रुपये तक खर्च करने पड़ सकते हैं। राहुल गांधी ने दावा किया कि करीब चार लाख छात्रों ने इस तरह के आवेदन किए हैं और सवाल उठाया कि इससे सीबीएसई कितनी कमाई कर रहा है। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि जब स्कैनिंग मोबाइल फोन से की जाती है तो गलत मूल्यांकन होना स्वाभाविक है और फिर उसे ठीक कराने का खर्च भी छात्र को ही उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि गलती सीबीएसई की है, सजा बच्चे को मिल रही है और कमाई सरकार कर रही है।

सीबीएसई ने कड़ी निगरानी का दिया आश्वासन

इस बीच, ऑन-स्क्रीन मार्किंग (OSM) मूल्यांकन प्रणाली को लेकर चल रहे विवाद के बीच रविवार को सीबीएसई ने कहा कि उसने अपने सेवा प्रदाता के ऑनमार्क पोर्टल में चिन्हित कमजोरियों पर कड़ी निगरानी रखी है और साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों की टीम को सिस्टम मजबूत करने के लिए तैनात किया है। सीबीएसई ने एक्स पर जारी बयान में कहा कि विभिन्न सरकारी एजेंसियों और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) के साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों की टीम पिछले कुछ दिनों से पोर्टल को सुरक्षित बनाने पर काम कर रही है।

दिल्ली में SPA की बिल्डिंग में लगी आग पर आया कांग्रेस का रिएक्शन, कहा- शिक्षा मंत्रालय के ऑफिस में...

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के ITO इलाके में सोमवार (1 जून, 2026) सुबह शिक्षा मंत्रालय के कार्यालय में आग लगने की घटना सामने आई। यह आग स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (SPA) कैंपस में स्थित शिक्षा मंत्रालय के ऑफिस की दूसरी मंजिल पर लगी। एक अधिकारी के अनुसार, आग लगने की सूचना दिल्ली फायर सर्विस को सुबह करीब 9:37 बजे मिली। सूचना मिलते ही दमकल विभाग की 8 गाड़ियां मौके पर भेजी गईं और आग पर काबू पाने का काम शुरू किया गया। इस घटना पर कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर पोस्ट कर लिखा कि शिक्षा मंत्रालय के ऑफिस में आग लगने की खबर बहुत चिंताजनक है। हालांकि, यह बहुत संदिग्ध भी है। वहीं घटनास्थल पर फिलहाल दमकल कर्मियों का आग बुझाने का अभियान जारी है। राहत की बात यह है कि इस घटना में

अब तक किसी के घायल होने या हताहत होने की कोई सूचना नहीं मिली है। अधिकारियों ने बताया कि आग लगने के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है। आग पर पूरी तरह काबू पाने के बाद जांच की जाएगी, जिसके बाद ही घटना की असली वजह सामने आ सकेगी। कांग्रेस ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) की ऑन-स्क्रीन मार्किंग (OSM) सिस्टम को लेकर सोमवार (1 जून 2026) को शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर निशाना साधा और कहा कि अपना राजधर्म निभाते हुए उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह दावा भी किया कि प्रधान अहंकार और अक्षमता की जीती-जागती मिसाल बन चुके हैं। रमेश ने एक्स पर पोस्ट किया, 'OSM सिस्टम में साइबर सुरक्षा संबंधी खामियों से इनकार करने के बाद अब CBSE ने आखिरकार यह स्वीकार कर लिया है कि सिस्टम से समझौता किया गया था, लेकिन अपने कॉन्ट्रैक्टर कोएम्प्ट के खिलाफ वह क्या कार्रवाई करने जा रहा है?'

आईआईटी दिल्ली जोन का दबदबा, शुभम कुमार ने 330 अंकों के साथ किया टॉप

नई दिल्ली। जेईई (एडवांस्ड) 2026 का परिणाम जारी कर दिया गया है। इस वर्ष कुल 56,880 अभ्यर्थियों ने परीक्षा में सफलता हासिल की है। सफल उम्मीदवारों में 10,107 छात्राएं भी शामिल हैं। परिणाम डाउनलोड करने के लिए उम्मीदवारों को अपने रोल नंबर, जन्म तिथि और पंजीकृत मोबाइल नंबर की सहायता से लॉग इन करना होगा।

स्कोरकार्ड में उम्मीदवार का नाम, क्वालिफाई करने की स्थिति, ऑल इंडिया रैंक (AIR), विषयवार अंक, कुल प्राप्त अंक, श्रेणीवार रैंक तथा कटऑफ संबंधी जानकारी उपलब्ध होगी। आईआईटी दिल्ली जोन के शुभम कुमार ने कॉमन रैंक लिस्ट (CRL) में पहला स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने 360 में से 330 अंक

हासिल किए हैं। वहीं, कबीर छिल्लर ने 329 अंकों के साथ दूसरा स्थान हासिल किया, जबकि जतिन चाहर 319 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। तीनों टॉपर्स आईआईटी दिल्ली जोन से हैं। जॉइंट एंट्रेंस एग्जाम एडवांस्ड 2026 में कोटा ने एक बार फिर इतिहास रच दिया है। कोटा ने लगातार तीसरे साल ऑल इंडिया 1 रैंक प्राप्त कर कोटा कोचिंगों को गौरांवित किया है। ऑल इंडिया गल्स टॉपर आरोही देशपांडे भी कोटा क्लासरूम से ही हैं। रिजल्ट के बाद कोटा में जश्न का माहौल है। जेईई एडवांस्ड में जेईई मेन में भी टॉप करने वाले और 100 परसेंटाइल स्कोर बनाने वाले बिहार के गया निवासी शुभम कुमार ने टॉप किया है।

'रणनीतिक रूप से मजबूत हुए दोनों देशों के संबंध'

भारत-ऑस्ट्रेलिया रक्षा वार्ता में बोले राजनाथ

नई दिल्ली। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच रक्षा व सुरक्षा सहयोग को और मजबूत बनाने के उद्देश्य से सोमवार को नई दिल्ली में दूसरी भारत-ऑस्ट्रेलिया रक्षा मंत्रिस्तरीय वार्ता आयोजित हुई। बैठक की संयुक्त अध्यक्षता रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और ऑस्ट्रेलिया के उप प्रधानमंत्री व रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्ल्स ने की। बैठक के दौरान ऑस्ट्रेलियाई रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्ल्स ने कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के संबंध पहले कभी इतने रणनीतिक रूप से एकजुट नहीं रहे। उन्होंने दोनों देशों के बीच बढ़ते रक्षा और सुरक्षा सहयोग को क्षेत्रीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण बताया।

वहीं, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के रक्षा संबंधों में पिछले कुछ वर्षों में

उल्लेखनीय मजबूती आई है। उन्होंने दोनों देशों के बीच बढ़ते सैन्य सहयोग, संयुक्त अभ्यासों और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में साझा रणनीतिक हितों पर जोर दिया। बैठक में दोनों नेता द्विपक्षीय रक्षा सहयोग की प्रगति की समीक्षा करेंगे और सहयोग के नए क्षेत्रों की पहचान पर चर्चा की। वार्ता का मुख्य फोकस रक्षा व सुरक्षा साझेदारी को मजबूत बनाने, सैन्य बलों के बीच इंटरऑपरेबिलिटी बढ़ाने, रक्षा उद्योग सहयोग को विस्तार देने व सह-विकास और सह-उत्पादन के अवसरों को आगे इसके अलावा, दोनों पक्ष हिंद-प्रशांत क्षेत्र से जुड़े क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा मुद्दों पर भी विचार-विमर्श किया। भारत के रक्षा मंत्रालय के अनुसार यह बैठक दोनों देशों के बीच रणनीतिक विश्वास और सहयोग को और मजबूत करेगी व क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि रिचर्ड मार्ल्स की यह यात्रा अक्तूबर 2025 में ऑस्ट्रेलिया में आयोजित पहली रक्षा मंत्रिस्तरीय वार्ता के बाद हुई है, जो भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापक रणनीतिक साझेदारी की बढ़ती गति को दर्शाती है। भारत के मुक्त, खुले, समावेशी और समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र के दृष्टिकोण में ऑस्ट्रेलिया एक महत्वपूर्ण साझेदार है। ऑस्ट्रेलियाई रक्षा मंत्रालय ने भी इस यात्रा को दोनों देशों के रक्षा संबंधों में अभूतपूर्व प्रगति का प्रतीक बताया है।

कैंसर मरीजों के इलाज में मिली नई सफलता, अब बिना मास्क हो सकेगी रेडियोथेरेपी

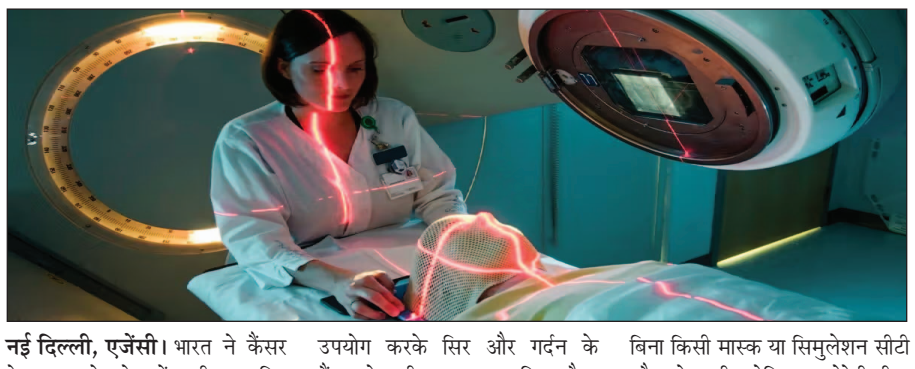

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत ने कैंसर के इलाज के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। सर एचएन रिलायंस फाउंडेशन अस्पताल के डाक्टरों ने भारत में पहली बार एआई संचालित सरफेस गाइडेड रेडियोथेरेपी (एसजीआरटी) और एडेप्टिव रेडियोथेरेपी के अनूठे संयोजन का उपयोग करके सिर और गर्दन के कैंसर के मरीज का इलाज किया है।

पारंपरिक रेडियोथेरेपी में मरीज के सिर को स्थिर रखने के लिए एक बेहद तंग प्लास्टिक मास्क पहनाया जाता है और सीटी सिमुलेशन स्कैन किया जाता है, जिसमें काफी समय लगता है, लेकिन इस तकनीक से डाक्टरों ने बिना किसी मास्क या सिमुलेशन सीटी स्कैन के सटीक रेडिएशन थेरेपी दी।

डॉक्टरों के अनुसार, मुंह के कैंसर से पीड़ित रोगी पिछली सर्जरी और रेडियोथेरेपी उपचारों के असफल होने के बाद अस्पताल में आया था। ट्यूमर अत्यधिक बढ़ा हुआ था और लगातार ब्लीडिंग हो रही थी।

उन्नत तकनीक का सफलतापूर्वक उपयोग

सिर और गर्दन के कैंसर के लिए पारंपरिक रेडियोथेरेपी रोगी की हलचल को रोकने के लिए तंग प्लास्टिक मास्क और सिमुलेशन सीटी स्कैन पर निर्भर करती है, डॉक्टरों ने महसूस किया कि गंभीर रोगी उस कठोर प्रक्रिया को बर्दाश्त नहीं कर सकेगा।

रक्तस्राव को रोकने के लिए आवश्यक विकिरण देने हेतु अस्पताल ने इस उन्नत तकनीक का सफलतापूर्वक उपयोग किया। मरीज पर इलाज का सकारात्मक परिणाम रहा और उसे 13 मई को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। सर्फेस गाइडेड रेडियोथेरेपी तकनीक में मरीज की त्वचा को ट्रैक करने के लिए 3 डी कैमरा सिस्टम और एआइ का उपयोग किया जाता है। यदि मरीज थोड़ा भी हिलता है, तो रेडिएशन बीम अपने आप रुक जाती है, जिससे तंग मास्क लगाने की जरूरत नहीं पड़ती।

एडेप्टिव रेडियोथेरेपी एआई-संचालित सिस्टम हर दिन मरीज के शरीर और ट्यूमर के बदलते आकार को रियल टाइम में ट्रैक करता है और उसी अनुसार रेडिएशन की डोज को एडजस्ट करता है। सर एचएन रिलायंस फाउंडेशन अस्पताल के रेडिएशन आंकोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. प्रसाद राज दांडेकर ने बताया कि यह तकनीक उपचार को अधिक सटीक और प्रभावी बनाती है, जिससे मरीजों के इलाज के परिणाम बेहतर होते हैं।

'नीट-यूजी परीक्षा CBT मोड में हो', याचिका पर अदालत का तत्काल सुनवाई से इनकार

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने 2026 की नीट-यूजी परीक्षा को कंप्यूटर आधारित मोड के माध्यम से आयोजित करने की मांग वाली याचिका पर तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया है। यह याचिका जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस अरविंद कुमार की आंशिक कार्यदिवस वाली बेंच के समक्ष पेश की गई। कोर्ट ने मामले को अवकाश के बाद सूचीबद्ध किया है। जस्टिस नरसिम्हा ने टिप्पणी की, "वे (एनटीए) परीक्षा को दोबारा आयोजित कर रहे हैं। उन पर कितना दबाव है। हम अवकाश के बाद इस पर चर्चा करेंगे।"

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहा कि आंशिक न्यायिक कार्य दिवसों के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ताओं को न तो मामलों की तत्काल सूचीबद्धता के लिए उल्लेख (मेंटशन) करने की अनुमति दी जाएगी और न ही वे सूचीबद्ध मामलों में बहस कर सकेंगे। शीर्ष अदालत ने कहा कि यह व्यवस्था युवा वकीलों को आंशिक न्यायिक कार्य दिवसों के दौरान अपने मामलों की पैरवी का अवसर देने के लिए की जा रही है। यह अवधि आज से 12 जुलाई तक रहेगी।

सुप्रीम कोर्ट की ग्रीष्मकालीन छुट्टियों को अब आंशिक न्यायिक कार्य दिवस नाम दिया गया है। इस दौरान प्रत्येक सप्ताह तीन से चार पीठें न्यायिक कार्य करेंगी। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति पीबी वराले की पीठ ने कार्यवाही शुरू होते ही स्पष्ट किया, 'मेरी अदालत में किसी भी वरिष्ठ अधिवक्ता को अनुमति नहीं दी जाएगी।'

हर बार की तरह अब नहीं डूबेंगे बिजनौर के 40 गांव! सरकार के इस प्लान से खत्म होगी परेशानी

आर्यावर्त संवाददाता

बिजनौर। यूपी के बिजनौर जिले में मानसून की दस्तक से पहले गंगा नदी के कटाव और संभावित बाढ़ से बचाव के लिए बड़े स्तर पर तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। सिंचाई विभाग इस बार पारंपरिक बोल्डर और पत्थरों के बजाय अत्याधुनिक विदेशी आर्टीकुलेटेड कंक्रीट ब्लॉक मैट्रेस (ACBM) तकनीक का उपयोग कर रहा है। योगी सरकार की इस महत्वाकांक्षी परियोजना का उद्देश्य गंगा किनारे बसे 40 से अधिक संवेदनशील गांवों और हजारों हेक्टेयर कृषि भूमि को कटाव और बाढ़ के खतरे से सुरक्षित करना है। सिंचाई विभाग के मध्य गंगा खंड-5 के अधिशासी अभियंता के.पी। सिंह ने बताया कि मध्य गंगा बैराज के अत्यंत

संवेदनशील बाएं अफ्लैक्स तटबंध (LAB) पर लगभग 1060 मीटर लंबाई में ACBM तकनीक से सुरक्षा कार्य तेजी से किया जा रहा है। पिछले वर्ष मानसून के दौरान गंगा की तेज धारा के कारण इसी क्षेत्र में करीब 40 वर्ष पुराना तटबंध क्षतिग्रस्त हो गया था, जिससे आसपास के गांवों में बाढ़ और कटाव का गंभीर खतरा पैदा हो गया था। उन्होंने बताया कि स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और सिंचाई मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने सीनियर इंजीनियरों के साथ समीक्षा कर तटबंध को आधुनिक तकनीक से मजबूत करने का निर्णय लिया, जिसके बाद कटान को रोकने के लिए पहली बार इस क्षेत्र में ACBM तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। 100 करोड़ रुपये की लागत से विदेशी तकनीक आधारित बाढ़ सुरक्षा कार्य कराए जा रहे हैं, जिससे हर वर्ष होने वाले कटाव और बाढ़ के खतरे को काफी हद तक कम किया जा सकेगा।

क्या है ACBM तकनीक और क्यों है खास?

सिंचाई विभाग के प्रमुख अभियंता संदीप कुमार ने बताया कि ACBM मूल रूप से कंक्रीट के भारी-भरकम ब्लॉकों का एक लचीला और मजबूत लेकिन फ्लैक्सिबल मैट्रैस होता है। नायलान रस्सियो, स्टेनलैस स्टील वायर से जोड कर जियोफैब्रिक टैक्सटाइल के बीच मजबूत कंक्रीट भरी जाती है, जो एक मैट्रैस (चटाई) नुमा आकार ले लेती है। नदी इंजीनियरिंग में इस तकनीक के सुरक्षा पारंपरिक बोल्डर या पत्थरों से कहीं बेहतर पाए गए हैं। यह तटबंध और नदियों के कटाव को रोकने में बेहद प्रभावी है।

नहीं टूटने देता बांध

पारंपरिक पत्थरों की दीवारें नदी के तेज बहाव के नीचे से मिट्टी खिसकने पर भरभरा कर ढह जाती हैं। इसके विपरीत, ACBM ब्लॉक्स आपस में उच्च क्षमता वाली नायलॉन या स्टील की रस्सियों से बंधे होते हैं। यदि नदी की सतह के नीचे से मिट्टी कटती भी है, तो यह पूरा कंक्रीट का जाल खुद को नदी के नए ढाल के अनुसार मोड़ लेता है, जिससे मुख्य बांध कभी नहीं टूटता।

पानी की गति को करता है नियंत्रित

यह तकनीक गंगा की मुख्य और उप-धाराओं के सीधे प्रहार को झेलती है और किनारों से टकराने वाले पानी की गति को धीमा कर देती है, जिससे जलभराव और कृषि भूमि के बह जाने का खतरा समाप्त हो जाता है।

कैसे बनता है मैट्रेस?

सिंचाई विभाग के प्रमुख अभियंता संदीप कुमार के अनुसार ACBM तकनीक में भारी कंक्रीट ब्लॉकों को उच्च क्षमता वाली नायलॉन रस्सियों और स्टेनलेस स्टील वायर से जोड़कर जियोफैब्रिक टेक्सटाइल पर एक मजबूत और लचीले मैट्रेस का निर्माण किया जाता है। यह संरचना नदी के तेज बहाव और कटाव को प्रभावी ढंग से रोकने में सक्षम होती है।

फेसबुक पर दोस्त बनकर ठगों ने उड़ाए 1.61 लाख, सऊदी में फंसे होने का बनाया बहाना

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। साइबर ठगी का एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां एक युवक अपने ही दोस्त की फर्जी फेसबुक आईडी के झांसे में आकर 1 लाख 61 हजार रुपये गंवा बैठा। जालसाजों ने युवक के परिचित बनकर सऊदी अरब में फंसे होने और भारत लौटने के लिए पैसों की जरूरत बताकर उससे किश्तों में रकम ऐंठ ली। पीड़ति की शिकायत पर साइबर क्राइम थाने में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

मामला सोनरा गांव निवासी अफजल खां से जुड़ा है। बताया गया कि अफजल के फेसबुक अकाउंट पर सलमान जी नाम की आईडी से संदेश आया। मैसेज करने वाले ने खुद को उनका परिचित सलमान बताते हुए कहा कि वह सऊदी अरब में फंस गया है और वीजा वापस पाने तथा भारत लौटने के लिए तत्काल पैसों की जरूरत है। उसने घर में शादी होने की बात कहकर भावनात्मक दबाव भी बनाया। दोस्त को मुसीबत में समझकर अफजल ने मदद के लिए हामी भर दी। इसके बाद जालसाजों ने अलग-अलग बहानों से विभिन्न बैंक खातों, यूपीआई आईडी और क्यूआर कोड भेजकर पैसे मंगवाने शुरू कर दिए। अफजल ने पे जेड ऐप समेत अन्य माध्यमों से कुल 1 लाख 33 हजार रुपये ट्रांसफर कर दिए। बाद में और पैसों की मांग होने पर उन्होंने अपनी भाभी रुसदा बानो के बैंक ऑफ बड़ौदा खाते से भी 28 हजार रुपये आरोपियों के बताए खातों में भेज दिए।

सूर्या का 'कातिल' ढेर : 'एनकाउंटर तो ठीक है, लेकिन...', अब मां ने कही ये बात, सामने आए एक और नए वीडियो से उलझन

आर्यावर्त संवाददाता

गाजियाबाद। उन लोगों ने मेरे जीने का सहारा छीन लिया...न अपना मकान न रोजगार बेटे को भी इन लोगों ने छीन लिया, अब कैसे जिऊंगी। जिन लोगों ने मेरे साथ ऐसा किया है उनके साथ भी ऐसा हो। यह बातें गाजियाबाद के खोड़ा में मारे गए सूर्या की मां सरोज ठाकुर ने रविवार की सुबह बेटे को याद करते हुए कहीं। पुलिस ने जब आरोपी असद को मुठभेड़ में ढेर करने की बात बताई तब उन्हें शायद कुछ संतुष्टि हुई। हालांकि परिवार ने कहा इस बात पर वह तब तक यकीन नहीं करेंगे जब तक उन्हें असद का शव नहीं दिखाया जाता। पुलिस अधिकारी और मौके पर पहुंचे राजनेताओं के समझाने पर परिजनों को यकीन हुआ। आंख से बहते आंसू और सामने बेटे की तस्वीर को देखती हुई नजरें। यह गमगीन करने वाला दृश्य सूर्या के घर का था। जो बेटा कुछ देर में घर लौटने की बात कहकर निकला वह कभी वापस नहीं लौटेगा यह उस मां ने कभी सोचा भी नहीं होगा। उस मां की आंखों को आज भी बेटे की मुस्कुराहट देखने और कानों को उसकी आवाज सुनने का इंतजार है।

घर के बाहर फोटो रख दी श्रद्धांजलि

सूर्या की शुक्रवार दोपहर नोएडा स्थित निजी अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हुई थी। इसके बाद से सूर्या के घर पर स्थानीय लोगों से लेकर हिंदू संगठनों और राजनैतिक दलों के लोगों का पहुंचना शुरू हो गया था। रविवार को भी यही नजारा नवनीत विहार में दिखाई दिया। हर गली लोगों से भरी हुई थी। सूर्या के घर वाली गली में पांव रखने की जगह नहीं थी। बड़ी संख्या में लोग परिवार से मिलने पहुंच रहे थे। इसके बाद परिजनों ने घर के बाहर सूर्या का फोटो रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

किसी को बख्शा नहीं जाएगा

रविवार सुबह कैबिनेट मंत्री सुनील शर्मा भी पीड़ित परिवार से मिलने पहुंचे। उन्होंने सूर्या को श्रद्धांजलि दी। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि किसी भी आरोपी को बख्शा नहीं जाएगा। हम और सरकार पीड़ित परिवार के साथ हैं। परिवार को जो बाकी आश्वासन दिए गए हैं उन्हें लेकर सरकार से लगातार बातचीत चल रही है।

बुलंदशहर ले गए शव

वारदात के बाद से असद का परिवार घर पर नहीं है। उसके पिता नवनीत विहार स्थित मदरसा वाली गली में दूसरी पत्नी के साथ किराये के मकान में रहते थे। करीब छह माह पहले गली नंबर दो स्थित मकान को बेचकर किराये के मकान में रहने गए थे। असद के भाई-भाभी खोड़ा में ही अलग मकान में किराये पर रहते हैं। पोस्टमार्टम के बाद असद का शव परिवार को सौंपा जाना था। पुलिस के पास परिजनों का कोई सुराग नहीं है। ऐसे में बुलंदशहर निवासी असद के चाचा शाबुद्दीन को सूचना दी गई। रविवार दोपहर शाबुद्दीन पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे और शव को बुलंदशहर ले गए।

श्रद्धांजलि देने पहुंचती रहीं टोलियां

सूर्या हत्याकांड के मद्देनजर रविवार को भी नवनीत विहार और आसपास के इलाकों में तनाव व्याप्त रहा। हिंदू संगठनों की टोलियां हर पांच मिनट में सूर्या को श्रद्धांजलि देने के लिए पहुंचतीं रहीं। जय श्रीराम और सूर्या के हत्यारों को गोली मारो के नारे लगाए जाते रहे। इस दौरान पूरा इलाका छावनी में तब्दील रहा।

सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। भीड़ इतनी बढ़ गई कि कुछ देर के लिए नेशनल हाइवे-09 पर जाम की स्थिति बन गई। लोग मोहल्ले के बाहर, एनएच-09 की सर्विस रोड पर भी जमा थे। इस दौरान कुछ लोगों ने सर्विस रोड पर जाम लगाने का भी प्रयास किया, लेकिन पुलिस के पहुंचने पर लोग तितर-बितर हो गए। क्षेत्र की महिलाएं भी बाकी आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग करते हुए सूर्या के घर पहुंचीं और उनकी मां सरोज ठाकुर से मिलकर सांत्वना दी।

बुलानी पड़ी आरएएफ, तैनात रही पीएससी

खोड़ा में पिछले तीन दिन से सांप्रदायिक तनाव का माहौल है। लगातार पुलिस बल तैनात है। रविवार को भी तनाव की स्थिति रही। इस दौरान एक दर्जन से अधिक थानों की फोर्स, तीन एसीपी, पीएसी और आरएएफ भी तैनात की गई। कुछ हिंदू संगठनों ने खोड़ा थाने पर पहुंचकर हत्या के विरोध में हंगामा किया। पुलिस अधिकारियों ने उन्हें समझाकर थाने से वापस भेजा।

असद का बताकर वीडियो वायरल

रविवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स व इंस्टाग्राम पर एक वीडियो तेजी से वायरल हुई। वीडियो पुलिस मुठभेड़ में मारे गए 50 हजार रुपये के इनामी हत्यारोपी असद की बताई गई। वीडियो के साथ लिखा गया कि हत्या के बाद असद ने बनाई वीडियो। हालांकि अमर उजाला इस वीडियो की पुष्टि नहीं करता। वीडियो में एक युवक कहता दिख रहा है कि तुम्हारे भाई ने एक मर्डर मार दिया है। अब कुछ दिन के लिए जेल जा रहा है.. भाई लोगों प्यार देना। वीडियो इंस्टाग्राम पर विलेन डैड के नामक आईडी से चलाई गई। इस आईडी के 1600 फॉलोवर्स हैं। वहीं आईडी पर करन कुमार नाम से भी आईडी का संचालन होने की बात सामने आई। जब वीडियो पुलिस के पास पहुंची तब जांच में सामने आया कि वीडियो दिल्ली में कुछ दिन पहले हुए हत्याकांड को अंजाम देने वाले किसी आरोपी की थी।

वसूली के आरोपों का वीडियो वायरल, खाद्य सुरक्षा अधिकारी से जवाब तलब

सुल्तानपुर। लम्भुआ तहसील क्षेत्र के खुदौली गांव स्थित एक आइसक्रीम फैक्ट्री में सैंपलिंग के दौरान कथित अवैध वसूली के आरोपों का मामला अब प्रशासन तक पहुंच गया है। घटना से जुड़ा वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद खाद्य सुरक्षा विभाग हरकत में आ गया है। जिला अभिहित अधिकारी (खाद्य सुरक्षा) अजीत कुमार ने मामले को गंभीरता से लेते हुए लम्भुआ क्षेत्र के खाद्य सुरक्षा अधिकारी अंजनी कुमार मिश्रा से स्पष्टीकरण तलब किया है। उन्होंने बताया कि वायरल वीडियो और लगाए गए आरोपों के संबंध में जवाब मांगा गया है। स्पष्टीकरण प्राप्त होने के बाद नियमानुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी। बताया जाता है कि खुदौली स्थित एक आइसक्रीम फैक्ट्री में जांच के दौरान टीम और फैक्ट्री पक्ष के बीच विवाद हो गया था। फैक्ट्री संचालक ने सैंपल भरने के नाम पर धनराशि मांगने का आरोप लगाया था।

21 जून को बंद रहेगा कानपुर सेंट्रल स्टेशन

आर्यावर्त संवाददाता

कानपुर। कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन से यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए एक बड़ा अपडेट रेलवे की तरफ से जारी किया गया है। ये रेलवे स्टेशन 21 जून 2026 को पूरी तरह से बंद रहेगा। रेलवे स्टेशन से न तो कोई ट्रेन गुजरेगी और न ही यहां से कोई गाड़ी खुलेगी। रेलवे यात्रियों के लिए यह बेहद जरूरी खबर है। यह बंदी रेलवे में तकनीकी कार्यों के कारण रखी गई है। कानपुर सेंट्रल 24 घंटे के लिए पूरी तरह बंद रहेगा।

इस दौरान यात्रियों की सुविधा के लिए ट्रेनों को गोविंदपुरी और चंदारी स्टेशन पर डायवर्ट किया गया है। एक दिन की इस व्यवस्था के बाद 22 जून से सभी सेवाएं सामान्य हो जाएंगी।

आपको बता दें कि कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन पर सिग्नलिंग सिस्टम और इंटरलॉकिंग अपग्रेड के काम के चलते 21 जून 2026 को पूरे 24 घंटे के लिए ट्रेनों का संचालन बंद रहेगा। रेलवे ने वैकल्पिक स्टेशनों पर अचानक भीड़ बढ़ने की संभावना को

देखते हुए यात्रियों को घर से थोड़ा पहले निकलने और अपनी यात्रा को सुगम बनाने की सलाह जारी की है।

कानपुर सेंट्रल स्टेशन पर 24 घंटे के इस बड़े शटडाउन के दौरान यात्रियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह रहेगी कि कानपुर सेंट्रल से आने-जाने वाली ट्रेनों को उन्हें गोविंदपुरी और चंदारी रेलवे स्टेशन से पकड़ना पड़ेगा। यात्रियों को यह भी ध्यान रखना होगा कि यदि वे उस दिन यात्रा कर रहे हैं तो टिकट पर स्टेशन का नाम जरूर जांच लें। इसके अलावा, यात्रा से पहले ट्रेन का अपडेट जरूर देख लें और स्टेशन समय से पहले पहुंचें।

रेलवे अधिकारियों के अनुसार, इस 24 घंटे के बंद के पीछे रेलवे के इंटरलॉकिंग और सिग्नलिंग सिस्टम को अपग्रेड करने का उद्देश्य है, जिससे ट्रेनों की सुरक्षा और संचालन को और बेहतर बनाया जा सके। 24 घंटे के इस बंद के दौरान किसी भी ट्रेन का ठहराव कानपुर सेंट्रल पर नहीं होगा। वहीं, कई ट्रेनों को डायवर्ट किया जाएगा और यात्रियों को दूसरे स्टेशन से यात्रा करनी पड़ सकती है। इस दौरान सेंट्रल स्टेशन की जगह गोविंदपुरी स्टेशन से मेमू ट्रेनें चलाई जाएंगी। दिल्ली-हावड़ा रूट की ट्रेनों को गोविंदपुरी और चंदारी से संचालित किया जाएगा। हावड़ा-दिल्ली रूट की ट्रेनें चंदारी और गोविंदपुरी होकर दिल्ली जाएंगी। वहीं, लखनऊ की ओर जाने वाली कुछ ट्रेनें सेंट्रल स्टेशन की बजाय गाजियाबाद और मुरादाबाद होकर जाएंगी।

सेंट्रल स्टेशन पर इंटरलॉकिंग का कार्य पूरा हो जाने के बाद ट्रेनों का संचालन और बेहतर तरीके से किया जा सकेगा। इस प्रणाली को इलेक्ट्रिक आधारित व्यवस्था की बजाय कंप्यूटर आधारित बनाया जाएगा। इससे सिग्नल फेल होने जैसी समस्याएं नहीं रहेंगी और इलेक्ट्रिक प्रणाली में होने वाली तकनीकी चूक की संभावना भी कम हो जाएगी।

नियमितीकरण समेत विभिन्न मांगों को लेकर पंचायत सहायकों का प्रदर्शन, सौंपा ज्ञापन

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। जिले के पंचायत सहायकों ने सोमवार को नियमितीकरण सहित विभिन्न मांगों को लेकर प्रदर्शन किया। पंचायत सहायकों ने जुलूस निकालकर कलेक्ट्रेट पहुंचकर मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन मजिस्ट्रेट को सौंपा।

पंचायत सहायकों का कहना है कि ग्राम पंचायत स्तर पर पंचायत सचिवों के प्रशासनिक कार्यों में सहयोग तथा ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए उनकी संविदा पर नियुक्ति की गई थी। वर्तमान में उन्हें प्रतिमाह 6 हजार रुपये मानदेय दिया जा रहा है, जो बढ़ती महंगाई के बीच पर्याप्त नहीं है। प्रदर्शन कर रहे पंचायत सहायकों ने आरोप लगाया कि उनसे मूल कार्यों के अतिरिक्त अन्य विभागों के कार्य भी कराए जाते हैं, लेकिन इसके लिए कोई अतिरिक्त भुगतान नहीं दिया जाता। पंचायत सहायक काजल चौरसिया ने बताया कि कई बार महीनों तक मानदेय का भुगतान नहीं होता, जिससे आर्थिक समस्याएं बढ़ जाती हैं। ज्ञापन के माध्यम से पंचायत सहायकों ने मानदेय बढ़ाने, कार्यों के लिए स्पष्ट नियमावली लागू करने तथा मानदेय भुगतान के लिए पारदर्शी पोर्टल व्यवस्था शुरू करने की मांग की। महिला पंचायत सहायकों ने अन्य महिला कर्मचारियों की तरह सुविधाएं और रियायतें दिए जाने की भी मांग उठाई। जिले भर से पहुंचे सैकड़ों पंचायत सहायकों ने चेतावनी दी कि यदि 15 जून तक उनकी मांगों पर विचार नहीं किया गया तो वे लखनऊ में बड़ा आंदोलन करेंगे।

युवक का हाई-वोल्टेज ड्रामा : सदर एसडीएम कोर्ट के पास मोबाइल टावर पर चढ़ा, डीएम को बुलाने की जिद पर अड़ा

आर्यावर्त संवाददाता

गाजीपुर। गाजीपुर शहर कोतवाली सदर तहसील स्थित एसडीएम कोर्ट के पास सोमवार को एक युवक मोबाइल टावर पर चढ़ गया। उसने भूमि कब्जे का निस्तारण न होने से नाराज होकर यह कदम उठाया। युवक को टावर से नीचे उतारने के लिए एएसपी सिटी डॉ. राकेश मिश्रा, सदर एसडीएम, तहसीलदार सहित अन्य आलाधिकारी मान- मनौव्वल करते रहे, लेकिन वह मौके पर डीएम अनुपम शुक्ला को बुलाने की जिद पर अड़ा रहा।

मुगलानी चक निवासी संदीप चौहान अपने भाई मंजीत चौहान और भाभी सावित्री चौहान के साथ सदर तहसील पहुंचा था। सुबह नौ बजे संदीप एसडीएम कोर्ट के पास मोबाइल टावर पर चढ़ गया। यह देख आसपास के लोगों की भीड़ जुटने लगी। देखते ही देखते मामले की जानकारी पुलिस व प्रशासन की टीम को हो गई। घंटों मान- मनौव्वल के बाद भी वह नीचे नहीं उतरा। संदीप चौहान के भाई मंजीत चौहान ने बताया कि मुगलानीचक स्थित भूमि पर भू - माफिया कब्जा कर लिए हैं। शासन से लेकर जिला प्रशासन के कार्यालय का चक्कर काटने के बावजूद समस्या निस्तारित नहीं हो सका। एएसपी सिटी डॉ. राकेश मिश्रा ने बताया कि युवक को समझा-बुझाकर टॉवर से नीचे उतराने का प्रयास किया जा रहा है।

अलीगढ़ में हर व्यक्ति के हिस्से आ रहा 875 ग्राम दूध, यहां से हर रोज एनसीआर भेजा जा रहा पांच लाख लीटर

अलीगढ़ का औसत दूध उत्पादन लगभग 35 लाख लीटर रोजाना पहुंच गया है। घरेलू जरूरतें बेहतर ढंग से पूरी हो रहीं हैं। रोजाना लगभग पांच लाख लीटर दूध दिल्ली एनसीआर भेजा जा रहा है, जिससे किसानों की आय में इजाफा हुआ है।

-डॉ. दिवाकर त्रिपाठी, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी।

अलीगढ़ मंडल के चारों जिलों में पराग डेयरी से जुड़े किसानों का दूध उत्पादन बीते चार साल में बढ़ा है। वर्तमान में यह 24,344 लीटर तक पहुंच गया है, अब इसको 25 हजार लीटर रोजाना तक पहुंचाने का लक्ष्य है।

-संजीव, प्रधान प्रबंधक, पराग डेयरी

आर्यावर्त संवाददाता

अलीगढ़। यूपी में सबसे ज्यादा दुग्ध उत्पादन करने वाले शीर्ष जिलों में से एक अलीगढ़ में हर व्यक्ति के हिस्से 875 ग्राम दूध आ रहा है। यह मात्रा राष्ट्रीय औसत से बहुत ज्यादा है। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि अलीगढ़ में दुग्ध उत्पादन बढ़कर प्रतिदिन 35 लाख लीटर रोजाना तक पहुंच गया है। उत्पादन अधिक होने के चलते अब पांच लाख लीटर दूध रोजाना एनसीआर भेजा जा रहा है। बुलंदशहर के बाद अलीगढ़ एनसीआर के लिए सबसे बड़ा दुग्ध हब बना है।

वैश्विक भोजन के रूप में दूध के महत्व को पहचानने और लोगों को जागरूक करने के लिए हर साल एक जून को विश्व दुग्ध दिवस मनाया जाता है। इस साल अलीगढ़ के लिए यह दिवस बहुत खास रहा, क्योंकि दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए अलीगढ़ में दुधारू मवेशियों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। पशुपालन विभाग के अनुसार अलीगढ़ में इनकी संख्या बढ़कर 14 लाख तक पहुंच गई है। इनमें 10 लाख भैंस, तीन लाख गाय और एक लाख बकरियां शामिल हैं। इनमें से सात लाख पशु प्रतिदिन औसतन पांच लीटर दूध देते हैं, जिससे जिले का दैनिक उत्पादन 35 लाख लीटर तक पहुंच गया है।

जिले की कुल अनुमानित आबादी 44 लाख के हिसाब से यह उपलब्धता प्रति व्यक्ति करीब 875 ग्राम प्रतिदिन बैठती है। प्रतिदिन 35 में से 20 लाख लीटर दूध की खपत अलीगढ़ में हो रही है। मिठाई, खोवा, घी, दही, छाछ, मठ्ठा और अन्य दुग्ध उत्पादों में लगभग 10 लाख लीटर दूध उपयोग हो रहा है। बकाया पांच लाख लीटर दूध दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद समेत एनसीआर के बाजारों में भेजा जा रहा है। वर्ष 2024 में जारी आईसीएमआर के आहार दिशानिर्देश बताते हैं कि एक सामान्य वयस्क को प्रतिदिन लगभग 300 मिलीलीटर दूध लेना चाहिए। गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए यह मात्रा 400 मिलीलीटर प्रतिदिन तक है। ऐसे में अलीगढ़ में प्रति व्यक्ति करीब 875 ग्राम दूध की उपलब्धता जिले को दुग्ध समृद्ध क्षेत्रों की श्रेणी में खड़ा कर रही है। इसका बड़ा असर प्रदेश स्तर पर भी देखने को मिला है। 2016-17 से 2024-25 के बीच उत्तर प्रदेश में दूध का उत्पादन 40 फीसदी बढ़ा है। कुल दुग्ध उत्पादन 277 लाख टन से बढ़कर 388 लाख टन तक पहुंच गया। देश के कुल दूध उत्पादन में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी लगभग 16 फीसदी है जबकि उत्तर प्रदेश के कुल उत्पादन में 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर, मेरठ, आगरा, हाथरस और अलीगढ़ जिले की है।

चार साल में 73 फीसदी बढ़ा उत्पादन

अलीगढ़ मंडल में सहकारी समितियों से इन दिनों रोजाना 24,344 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है। 12,430 सदस्यों वाली इन समितियों में 6,736 किसान दूध उत्पादन कर रहे हैं। इसमें साल दर साल लगातार वृद्धि हो रही है। वर्ष 2023 में यह 14,000 लीटर, वर्ष 2024 में 16,169 लीटर और वर्ष 2025 में 19,406 और वर्ष 2026 में 24,344 लीटर तक पहुंच गया है। इस तरह से बीते चार साल में इसमें लगभग 73 फीसदी की बड़ी वृद्धि हो चुकी है।

सवा लाख पैकेट पैक्ड दूध का कारोबार

अलीगढ़ में पराग की सहकारी समिति के मेरठ के प्लांट से रोजाना लगभग पांच हजार पैकेट पैक्ड दूध आता है। जिसकी यहां पर बिक्री होती है। इसके अलावा अमूल, मदर डेयरी, अनांदा और अन्य कंपनियों के पैक्ड दूध का बड़ा कारोबार हो रहा है। रोजाना लगभग सवा लाख पैकेट पैक्ड दूध बिक रहा है।

छह बड़े कारण, जिन्होंने बढ़ाया दूध

1-नंदनी कृषक समृद्धि योजना
2-मिनी नंदनी कृषक समृद्धि योजना
3-मुख्यमंत्री स्वदेशी गो-संवर्धन योजना
4-मुख्यमंत्री निराश्रित/बेसहारा गोवंश
5-मुख्यमंत्री प्रगतिशील पशुपालक प्रोत्साहन योजना
6- बड़े प्रोजेक्ट पर अनुदान

सीएम का जनता दर्शन: बच्चे से बोले सीएम- तुम पढ़ाई पर ध्यान दो, बाकी चीजें हम पर छोड़ दो, हम देख लेंगे

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को 'जनता दर्शन' किया। उन्होंने प्रदेश भर से आए लोगों से मुलाकात की, उनके प्रार्थना पत्र लिए और उचित कार्रवाई के लिए आश्वस्त किया। राजस्व व पुलिस से जुड़े मामलों को मुख्यमंत्री ने सुना और संबंधित अधिकारियों को प्रार्थना पत्र देते हुए कहा कि आमजन की समस्याओं का निस्तारण समयसीमा के भीतर हो, विलंब होने पर संबंधित अधिकारी की जवाबदेही भी तय की जाए। सीएम योगी ने कुछ बच्चों से शिक्षा के बारे में भी पूछा और अभिभावकों से कहा कि बच्चों को

स्कूल अवश्य भेजें, क्योंकि पढ़ा-लिखा बच्चा ही सशक्त भारत की नींव है। मुख्यमंत्री जी के समक्ष राजस्व व पुलिस से जुड़े भी कुछ मामले आए। मुख्यमंत्री ने उनका संज्ञान लिया और कहा कि लंबित राजस्व वादों का समयसीमा के भीतर निस्तारण किया जाए। छह महीने से अधिक लंबित वादों के कारणों की समीक्षा की जाए। उचित कारण न होने पर भी यदि निस्तारण में विलंब होता है तो संबंधित के खिलाफ कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

जरूरतमंद लोगों के चेहरे पर खुशी लाना शासन-प्रशासन का दायित्व

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार की प्राथमिकता है कि हर जरूरतमंद की समस्या का समाधान हो। अधिकारी पूरी संवेदनशीलता से सुनिश्चित करें कि बिना भेदभाव सभी को न्याय और हर पात्र को योजनाओं का लाभ मिले, जरूरतमंदों के समुचित इलाज की व्यवस्था हो। जरूरतमंद के चेहरे पर खुशहाली लाना शासन-प्रशासन का दायित्व है।

बेटा! तुम सिर्फ पढ़ाई करो, बाकी हम पर छोड़ दो

हापुड़ से एक बच्ची अपने अभिभावक के साथ आई थी। उसने अपने परिवार की माली स्थिति का जिक्र किया। मुख्यमंत्री ने पूछा कि किस क्लास में हो, इस पर बच्ची ने कक्षा-7 बताया और आगे की पढ़ाई में आने वाली बाधाओं का भी जिक्र किया। इस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि घर जाओ और सिर्फ पढ़ाई करो, बाकी हम पर छोड़ दो। अभिभावक से कहा कि शिक्षित बच्चा ही सशक्त भारत की नींव है। अधिकारी आपसे संपर्क करेंगे, आप बच्चों को स्कूल अवश्य भेजें।

घर के काम में सहयोग करते हुए भी अच्छे अंक ला रही हैं छात्राएं, छात्र उनसे प्रेरणा लें : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को लोकभवन में आयोजित कार्यक्रम मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह में यूपी बोर्ड और संस्कृत शिक्षा परिषद के टॉप 10, सीबीएसई और आईसीएसई के सर्वोच्च 10-10 समेत कुल 223 राज्य स्तरीय मेधावियों को एक-एक लाख रुपये, एक-एक टैबलेट, प्रशस्ति पत्र और मेडल देकर सम्मानित किया। सीएम ने समारोह में 11 विद्यालयों के प्रधानाचार्यों व शिक्षकों को भी शॉल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यह कार्यक्रम इस बात का सबूत है कि परिश्रम का परिणाम हमेशा सुखद होता है। उन्होंने कहा कि जब परिणाम सूची देखते हैं तो हम पाते हैं कि छात्राएं जो कि घर के काम में हाथ बंटाती हैं वो मेरिट की सूची में अधिक स्थान प्राप्त कर रही हैं। छात्रों को छात्राओं से प्रेरणा लेनी चाहिए कि वो घर के काम में माता-पिता का सहयोग करती हैं और पढ़ाई में भी आगे रहती हैं। सीएम योगी ने कहा कि यहां 223 टॉप टेन विद्यार्थियों के साथ ही जिला स्तर पर टॉप टेन 1459 छात्रों को भी सम्मानित किया जा रहा है। यह इन विद्यार्थियों की उपलब्धि और जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव भी है। इस परिणाम में 223 में से छात्र 85, छात्राएं 138 है। छात्राएं मेरिट सूची में ज्यादा और छात्र कम आए हैं। माध्यमिक शिक्षा परिषद में हाईस्कूल में 115 विद्यार्थियों में 34 छात्र और 81 छात्राएं हैं। इंटर में 9 छात्र और 14 छात्राएं हैं। छात्राएं ज्यादा मेहनत कर लेती हैं। ज्यादा अंक पाने की सामर्थ्य रखती हैं। मां-पिता का सहयोग करते हुए। उन्होंने कहा कि लगता है कि अब लड़के झाड़ू पोंछा ज्यादा लगाने लगे हैं। मोहल्ले में भी काम करने लगे हैं। उन्होंने कहा कि छात्र, छात्राओं से प्रेरणा लें कि वो कैसे घर के काम में सहयोग करते हुए अच्छे परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त कर रही हैं।

नौ साल पहले नकल से होती थी परीक्षा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज से नौ साल पहले ये कार्यक्रम नहीं हो सकता था। नकल से परीक्षा होती थी। मेरिट, डी मेरिट का पता नहीं। हमने नकल विहीन परीक्षा कराई। परीक्षा छात्र को परेशान करने का माध्यम नहीं होना चाहिए। आत्मविश्वास पैदा करने का भाव पैदा करे। उसका पसीना छुड़ाने के लिए पेपर न बने। परेशान न करे। शिक्षक को पता होता है कि उसका उत्तर क्या होता है। प्रश्न ऐसा हो कि छात्र थोड़े प्रयास से उसे हल कर सके। उसको हतोत्साहित न करे। परीक्षा प्रोत्साहन का माध्यम बने। 9 साल पहले नकल होती थी। शिक्षक भर्ती नहीं करते थे। विद्यालय भी वैसे थे। अंत में ठेका होना है तो छात्र मेहनत क्यों करे। पंजाब, जम्मू कश्मीर के छात्र 2017 तक यूपी में परीक्षा देते थे। अब ऐसा नहीं है। छात्र ही अपनी परीक्षा देगा। शिक्षक भी है, प्रॉक्सी शिक्षक नहीं होगा। इसके पहले कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माध्यमिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गुलाब देवी ने कहा कि आज कठिन प्रतिस्पर्धा में लाखों के बीच सर्वोच्च स्थान पाना चुनौती का काम है। आप ने रात दिन मेहनत कर इसे प्राप्त किया है। यह सम्मान समारोह ही नहीं जीवन को आगे बढ़ाने का उत्सव भी है। आपने निरंतर प्रयास कर अपना मार्ग प्रशस्त किया। प्रदेश का नाम रोशन किया है। जो लगन, मेहनत से लगे रहते हैं उनके लिए यह अवसर है। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह आपका अंतिम पड़ाव नहीं, जीवन की शुरुआत है। जीवन में हमेशा चुनौतियां होंगी। वहीं, दूसरी ओर संकल्प का ध्यान रखें। जो बनना चाहते हैं उसकी तैयारी शुरू करें। संकल्प में कोई विकल्प नहीं होता है। बार बार लक्ष्य न बदले, डॉक्टर, वकील और शिक्षक बनाना है। नेता बनना है तो कुछ करना ही नहीं है।

हाईस्कूल में आने पर बच्चों से मित्रवत व्यवहार करें अभिभावक

गुलाब देवी ने कहा कि अभिभावकों ने बच्चों की हर जरूरत पूरी की। चुनौती का भी सामना किया। छात्राओं के लिए रूढ़िवादी विचारों का सामना किया। वो समाज से लड़कर बच्चों को आगे बढ़ाते हैं। बच्चे आपके जीवन की धरोहर हैं। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति के समय लोगों के सामने बड़ी चुनौती है। मोबाइल अच्छी चीज है, इसमें पढ़ाई से जुड़ी चीजें हैं। अभिभावक देखें कि बच्चे इसका सही प्रयोग कर रहे हैं या नहीं। बच्चा हाईस्कूल में आ जाए तो उनके साथ मित्र की तरह व्यवहार करें तो बच्चा गलत भावना भी साझा करेगा और उसके कदम नहीं डगमगाएंगे।

उन्होंने कहा कि बच्चों के मित्र बनकर रहेंगे तो बच्चा सही तरह से आगे बढ़ेगा। आजकल मां को फुरसत नहीं रहती है बच्चों के लिए। शिक्षकों से कहूंगी कि आपकी समाज में एक अलग पहचान है। मां-पिता अपने बच्चे आपको समर्पित करते हैं। आपके कपड़े, आपका व्यवहार, कैसे आते, जाते हैं, ये सब प्रभाव डालता है। मैं खुद शिक्षक रही हूं। बच्चों के लिए आदर्श प्रस्तुत करें। गुरु से बढ़कर कोई नहीं होता है। उन्होंने कहा कि माध्यमिक शिक्षा विभाग ने सीएम के निर्देश पर सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इस साल भी यूपी बोर्ड परीक्षा नकलविहीन, शुचितापूर्ण हुई है। न पेपर लीक, न समय से पहले खोले गए। सभी को बधाई।

प्रताप सिंह बघेल प्रदेश के प्रभारी निदेशक माध्यमिक शिक्षा, अभी तक संभाल रहे थे बेसिक शिक्षा विभाग

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के सभापति और माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक का कार्यभार प्रताप सिंह बघेल को सौंपा गया है। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा निदेशक एवं सभापति डॉ. महेंद्र देव का 31 मई को अंतिम कार्य दिवस था।

प्रदेश सरकार ने शिक्षा विभाग में बड़ा प्रशासनिक फेरबदल करते हुए अपर शिक्षा निदेशक स्तर के दो वरिष्ठ अधिकारियों के तबादले कर दिए हैं। जारी आदेश के अनुसार प्रभारी शिक्षा निदेशक (बेसिक) के पद पर कार्यरत प्रताप सिंह बघेल को अब प्रभारी शिक्षा निदेशक (माध्यमिक) के पद पर तैनात किया गया है। वह प्रयागराज और लखनऊ से संचालित माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की जिम्मेदारी संभालेंगे।

प्रताप सिंह बघेल को प्रभारी माध्यमिक शिक्षा निदेशक का पद संभालने का आदेश सोमवार को

विशेष सचिव शिक्षा कृष्ण कुमार गुप्ता ने जारी किया। प्रताप सिंह बघेल के स्थान पर अनिल भूषण चतुर्वेदी को प्रभारी शिक्षा निदेशक बेसिक के पद पर तैनात किया गया है। अनिल भूषण चतुर्वेदी इससे पहले प्रभारी निदेशक साक्षरता एवं वैकल्पिक शिक्षा के पद पर तैनात थे।

अनिल भूषण चतुर्वेदी, जो वर्तमान में प्रभारी निदेशक, साक्षरता एवं वैकल्पिक शिक्षा के पद पर कार्यरत थे, उन्हें प्रभारी शिक्षा निदेशक (बेसिक), उत्तर प्रदेश नियुक्त किया गया है। शासन की ओर से जारी कार्यालय ज्ञापन में दोनों अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे तत्काल अपने नवीन तैनाती स्थल पर कार्यभार ग्रहण करें। शिक्षा विभाग में हुए इस बदलाव को आगामी शैक्षिक सत्र और विभागीय कार्यों की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

बारिश में नहाते समय गिरी मकान की नींव, 12 वर्षीय बालक की मौत

लखनऊ। रहीमाबाद थाना क्षेत्र के ग्राम युसूफ खेड़ा मजरा गोपालपुर में रविवार को एक दर्दनाक हादसे में 12 वर्षीय बालक की मौत हो गई। बारिश के दौरान मकान की नींव का हिस्सा अचानक भरभराकर गिरने से बालक उसकी चपेट में आ गया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया।पुलिस के अनुसार अनमोल रावत (12), पुत्र सुरेश रावत, अपने घर के बाहर बनी नींव के पास बारिश में नहा रहा था। इसी दौरान लगातार हो रही वर्षा के कारण नींव के नीचे की मिट्टी बह गई, जिससे नींव का हिस्सा अचानक ढह गया। मलबे की चपेट में आने से अनमोल गंभीर रूप से घायल हो गया।हादसे के बाद परिजनों और ग्रामीणों में अफरा-तफरी मच गई। परिजन तत्काल घायल बालक को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र माल लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। बालक की मौत की खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया और पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई।

शिक्षा मंत्री बोलीं– अपने पहनावे पर ध्यान दें महिला शिक्षक, पता ही नहीं चलता कौन छात्र है और कौन शिक्षक

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा राज्यमंत्री गुलाब देवी ने कहा कि शिक्षकों के ऊपर बड़ी जिम्मेदारी होती है। अभिभावक उन्हें अपना बच्चा सौंपते हैं। ऐसे में जरूरी है कि शिक्षक अपने व्यवहार और पोशाक पर भी ध्यान दें। उन्होंने कहा कि शिक्षकों का व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि छात्र उनका सम्मान करें। शिक्षक खुद भी अनुशासित हों जिससे कि छात्र उनका अनुसरण कर सकें। महिला शिक्षक अपने पहनावे पर भी खास ध्यान दें क्योंकि अब कई बार तो पता ही नहीं चलता है कि कौन छात्र है और कौन शिक्षक? शिक्षकों को हमेशा ही अपने आचरण से विद्यार्थियों के सामने उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा मंत्री गुलाब देवी सोमवार को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में अमर उजाला के मेधावी सम्मान समारोह को संबोधित कर रहीं थीं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में भाजपा की सरकार आने के माहौल बदला है अब नकल विहीन परीक्षा होती है पर पहले ऐसा संभव नहीं था। उन्होंने मेधावियों को जीवन में अनुशासित रहने और खूब परिश्रम करने की सलाह दी।

उन्होंने कहा कि जो लोग अनुशासित होते हैं वो व्यवस्थित होते हैं। ठीक समय से उठते हैं। ठीक से खाना खाते हैं और स्वस्थ रहते हैं और जो स्वस्थ होते हैं वो जीवन में खूब तरक्की करते हैं। उन्होंने कहा कि कठिन परिश्रम से बड़ी से बड़ी चुनौतियों से भी पार पाया जा सकता है। ऐसा कोई लक्ष्य नहीं है जिसे कठिन पश्रिम और अनुशासन से हासिल न किया जा सके।

'बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार करें'

उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद अभिभावकों से भी अपील की है कि 10वीं कक्षा के बाद अभिभावक बच्चों से मित्रवत व्यवहार करें जिससे कि वो अपनी हर बात आपको बता सकें। मोबाइल का उतना ही प्रयोग करें जितना की जरूरी है। बच्चों को मोबाइल देकर व्यस्त न करें बल्कि उनके साथ बात करें। कार्यक्रम में माध्यमिक शिक्षा राज्यमंत्री गुलाब देवी के अलावा, बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री संदीप सिंह और अपर मुख्य सचिव बेसिक व माध्यमिक शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा भी शामिल हुए।

लखनऊ में कालिदास मार्ग के पास चार संविदा कर्मियों ने खुद पर छिड़का पेट्रोल, आत्मदाह का किया प्रयास

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। लखनऊ में सोमवार को रोडवेज के चार संविदाकर्मियों ने आत्मदाह का प्रयास किया। चारों बॉटल में पेट्रोल लेकर पहुंचे और खुद पर उड़ेलने लगे। इस दौरान पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। उनका कहना है कि हमारी बात नहीं सुनी जा रही है। एक निजी कंपनी में सभी संविदा चालकों-परिचालकों का विलय किया जा रहा है। गौतमपल्ली थाना प्रभारी विपिन सिंह ने बताया, आत्मदाह का प्रयास करने वालों में औरैया के मुकेश सैनी, उन्नाव के ज्ञानेंद्र रावत, कानपुर के नितिन श्रीवास्तव और गोंडा के अभिषेक सिंह शामिल हैं। चारों सिटी बस सेवा के चालक बताए जा रहे हैं। लंबे समय से अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे।

दुबग्गा डिपो पर संविदाकर्मी कई दिनों से विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। आरोप है कि चालक-परिचालकों का निजी कंपनी एसएस इंटरप्राइजेज में विलय किया जा रहा है, जिसका वे विरोध कर रहे हैं। पुलिसकर्मियों ने कर्मचारियों को हिरासत में ले लिया।

प्रताप सिंह बघेल बने माध्यमिक शिक्षा निदेशक, अनिल भूषण चतुर्वेदी को बेसिक शिक्षा निदेशक की जिम्मेदारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में शासन ने बेसिक माध्यमिक शिक्षा विभाग में बड़ा बदलाव किया है। प्रताप सिंह बघेल को माध्यमिक शिक्षा निदेशक की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं अनिल भूषण चतुर्वेदी को बेसिक शिक्षा निदेशक बनाया गया है। माध्यमिक शिक्षा अनुभाग-6 के विशेष सचिव कृष्ण कुमार गुप्त ने आदेश जारी करके इसकी जानकारी दी। बताते चलें कि प्रताप सिंह बघेल और अनिल भूषण चतुर्वेदी दोनों ही शिक्षा प्रशासन का व्यापक अनुभव रखते हैं। ऐसे में उनके अनुभव और नेतृत्व का लाभ विभागीय योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन, प्रभावी समन्वय तथा समयबद्ध अनुश्रवण में मिलने की उम्मीद है। अभी तक डॉक्टर महेंद्र देव माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक थे। 31 मई को उनका कार्यकाल पूरा हो चुका है।

लखनऊ में तालाब में उतराता हुआ मिला बुजुर्ग महिला का शव, बेटे ने दर्ज कराई थी गुमशुदगी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। महिंगवा थाना के अंतर्गत सोमवार की सुबह घर से गायब एक बुजुर्ग महिला का शव चक बनकट गांव के बीच तालाब में उतराता हुआ पाया गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। चक बनकट निवासी अर्जुन के मुताबिक उनकी माता अन्नपूर्णा 85 वर्ष रविवार को घर से अचानक गायब हो गई थी। जिनकी काफी तलाश की लेकिन कुछ पता नहीं चला। इसके बाद रविवार को महिगंवा थाने में गुमशुदगी भी दर्ज कराई थी। इसके बाद गांव के नजदीक नहर व अन्य स्थानों पर खोजबीन की गई। लेकिन कुछ पता नहीं चला।

सोमवार की सुबह चक बनकट गांव की आबादी के बीच स्थित तालाब में कपड़े दिखाई दिए। इसके बाद पारिवारिक जनों ने नजदीक से पता लगाया तो बुजुर्ग महिला के रूप

में शिनाख्त हुई। इसके बाद शव को बाहर निकलवाया गया। मृतक बुजुर्ग महिला के दो पुत्र हैं। एक बड़ा बेटा देवेंद्र है तथा छोटा पुत्र अर्जुन है, जिसने गुमशुदगी दर्ज कराई थी।

पारिवारिक जनों ने बताया बुजुर्ग महिला को आंखों से दिखाई नहीं पड़ता था। शारीरिक रूप से भी कमजोर थी। वह बैठ, बैठ कर चलती थी। जिससे आशंका है कि वह तालाब में चली गई होगी।

थाना प्रभारी महिंगवा राधेश्याम मौर्य ने बताया शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। फिलहाल कोई शिकायत नहीं मिली है। जांच की जा रही है।

अंतरराष्ट्रीय बाल रक्षा दिवस और विश्व दुग्ध दिवस पर बोले केशव मौर्य, बच्चों की सुरक्षा और श्वेत क्रांति में महिलाओं की भूमिका को सराहा

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने अंतरराष्ट्रीय बाल रक्षा दिवस और विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं और उनका सुरक्षित, स्वस्थ एवं स्वर्णिम बचपन सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि भारत को दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बनाए रखने में करोड़ों पशुपालकों, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं और स्वयं सहायता समूहों की दीदियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र और राज्य सरकार बच्चों के संरक्षण और कल्याण के लिए अनेक योजनाएं संचालित कर रही हैं। उन्होंने बताया कि मिशन वात्सल्य के माध्यम से अनाथ, बेसहारा और संकटग्रस्त बच्चों को पारिवारिक

वातावरण और आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। वहीं मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना के तहत कोविड काल या अन्य परिस्थितियों में माता-पिता को खो चुके बच्चों को प्रतिमाह चार हजार रुपये की सहायता, निःशुल्क शिक्षा तथा बालिकाओं के विवाह के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है।उन्होंने कहा कि पोषण अभियान के अंतर्गत प्रदेश के आंगनबाड़ी केंद्रों को सक्षम आंगनबाड़ी के रूप में विकसित किया जा रहा है। हॉट कुक्ड मील योजना के जरिए बच्चों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे कुपोषण में कमी आई है। इसके अलावा ऑपरेशन कायाकल्प के तहत एक लाख पैंतीस हजार से अधिक प्राथमिक विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं और आधुनिक संसाधनों का विकास किया गया है। बाल श्रम और बाल विवाह के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस नीति अपनाई गई है तथा पॉक्सो अदालतों के माध्यम से बच्चों के खिलाफ अपराधों में त्वरित न्याय सुनिश्चित किया जा रहा है।विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश बन चुका है और वैश्विक दुग्ध उत्पादन में उसकी हिस्सेदारी लगभग 25 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि देश के कुल दुग्ध उत्पादन में उत्तर प्रदेश का योगदान लगभग 15 से 16 प्रतिशत है तथा प्रदेश का वार्षिक दुग्ध उत्पादन 33 मिलियन टन से अधिक के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच चुका है।केशव मौर्य ने उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत कार्यरत स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं की सराहना करते हुए कहा कि ग्रामीण महिलाएं डेयरी क्षेत्र की रीढ़ बन चुकी हैं। बुंदेलखंड सहित विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा संचालित दुग्ध उत्पादक कंपनियां श्वेत क्रांति को नई दिशा दे रही हैं। उन्होंने कहा कि हजारों गांवों में महिलाएं स्वचालित दुग्ध संकलन केंद्रों का संचालन कर रही हैं, जहां दूध की जांच, तौल और भुगतान की पूरी प्रक्रिया डिजिटल माध्यम से संचालित की जा रही है, जिससे बिचौलियों की भूमिका समाप्त हुई है।उप मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं दुग्ध उत्पादन के साथ-साथ आंगनबाड़ी केंद्रों के लिए पुष्टाहार निर्माण का कार्य भी कर रही हैं। इससे बाल पोषण और महिला सशक्तीकरण दोनों लक्ष्यों को एक साथ बल मिला है। उन्होंने कहा कि जब गांव की एक महिला सशक्त होती है तो पूरा परिवार और आने वाली पीढ़ियां सशक्त होती हैं। दूध उत्पादन से लेकर बाल पोषण तक स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने जो योगदान दिया है, वह आत्मनिर्भर भारत की सशक्त तस्वीर प्रस्तुत करता है।

बिजली बिल में बढ़ोतरी को लेकर अखिलेश यादव का हमला, बोले– भाजपा लगा रही 'इलेक्शन सरचार्ज'

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने प्रदेश में बिजली बिलों को लेकर भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि बिजली के बिल के नाम पर भाजपा सरकार वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव के खर्चों की व्यवस्था के लिए 'इलेक्शन सरचार्ज' लगा रही है।अखिलेश यादव ने कहा कि जून माह से आने वाले बिजली बिलों को देखकर लोगों की आंखों के आगे अंधेरा छा जाएगा। उन्होंने आरोप लगाया कि बिजली के बिल में भाजपा का कमीशन बढ़ा है और सरकार महंगाई बढ़ाकर जनता की जेब काटने का काम कर रही है। उनका कहना था कि प्रदेश और देश में पहले से ही महंगाई चरम पर है, इसके बावजूद भाजपा सरकार लगातार कीमतों में वृद्धि कर रही है, जिससे आम जनता परेशान और त्रस्त है।सपा अध्यक्ष ने

कहा कि भाजपा सरकार कभी डीजल और पेट्रोल के दाम बढ़ाती है तो कभी गैस सिलेंडर और बिजली की दरों में वृद्धि करती है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा की कथनी और करनी में बड़ा अंतर है। चुनाव के दौरान महंगाई कम करने के वादे किए गए थे, लेकिन सत्ता में आने के बाद लगातार महंगाई बढ़ाई जा रही है।उन्होंने कहा कि भाजपा की नीतियां आम जनता की बजाय पूंजीपतियों के हित में बनाई जाती हैं। भाजपा सरकार गरीबों और किसानों की जेब से पैसा निकालकर पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाती है और बाद में उनसे कमीशन तथा चंदा प्राप्त करती है। उन्होंने भाजपा को गरीब और किसान विरोधी बताते हुए कहा कि प्रदेश की जनता वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से बाहर कर समाजवादी पार्टी की सरकार बनाएगी, तभी महंगाई से राहत मिल सकेगी।अखिलेश यादव ने दावा किया कि बढ़ती महंगाई, बिजली बिलों में वृद्धि और जनविरोधी नीतियों के कारण जनता में भाजपा सरकार के प्रति व्यापक असंतोष है, जिसका असर आगामी विधानसभा चुनाव में देखने को मिलेगा।

रील्समय सब जग जानी

तुलसी के लिए समूचा विश्व ही श्रीराम और सीता की तरह रहा। आज की पत्रकारिता पर जिधर भी नजर फिराएं, कुछ उसी तरह टीवी मय ही लगती है। लगता नहीं कि मीडिया की की दुनिया में अखबार भी हैं, पत्रिकाएं भी हैं, रेडियो भी है और सबसे अहम इंटरनेट भी है। दो सौ साल की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास गरिमा के सोपानों से भरा हुआ है। नवजागरण को बढ़ावा देने, राष्ट्र निर्माण और सार्वजनिक जीवन मूल्यों की स्थापना में हिंदी पत्रकारिता ने महती भूमिका निभाई है। स्वाधीनता आंदोलन की कोख से उपजी हिंदी पत्रकारिता ने स्वाधीनता की लड़ाई भी लड़ी, हिंदी भाषा और साहित्य के उत्थान का माध्यम भी बनी, लेकिन दो सौ साल की यात्रा के उपरांत बाद के वर्षों के उसके इतिहास को देखते हैं तो वह सिर्फ टीवीमय नजर आती है, टीवी से भी आगे बढ़कर वह रीलमय नजर आती है। छापे से शुरू हिंदी पत्रकारिता का यह रूप छापे और रेडियो की उपस्थिति के बावजूद आज वह रील्स के इर्द-गिर्द घूमती नजर आ रही है। टेलीविजन तक तो स्थिति ठीक थी, लेकिन उसके बाद की जब तकनीक के सहारे टीवी की दुनिया में चुपके से रील्स ने दखल देनी शुरू की तो स्थितियां बदलने लगीं। हर नई तकनीक की अपनी कुछ खासियत होती है और इसके साथ ही वह अपना चरित्र भी विकसित करती है। रील्स का जो चरित्र विकसित हुआ है, उसमें उथलापन ज्यादा है, गंभीरता कम है। इसे समझने के लिए छापा यानी प्रेस से मीडिया तक की यात्रा को गंभीरता से देखना और समझना होगा। रेडियो के आविष्कार और फिर टेलीविजन के विस्तार के पहले तक पत्रकारिता की बुनियाद में छापेखाने ही रहे। शुरूआती दौर में पत्रकारिता को प्रेस इसी वजह से कहा गया। जब तक उसकी पहचान के साथ प्रेस जुड़ा रहा, उसके प्रति विशिष्टताबोध बना रहा। टेलीविजन के विस्तार और बजरिए इंटरनेट माध्यमों की आवाजाही ने इस विशिष्टाबोध युक्त पहचान को मीडिया में रूपांतरित कर दिया है। इस यात्रा में मोटे तौर पर पत्रकारिता के दो रूप दिखते हैं। स्वाधीनता आंदोलन की कोख से जन्मे छापे की पत्रकारिता कोख में मिले संस्कारों को अब तक कमोबेश अपनाए रखा है। बाद में आए रेडियो और टीवी में तकनीक भले ही प्रधान रहा,लेकिन उनके मूल में भी छापे की ही पत्रकारिता रही। इसके बावजूद तकनीक प्रधान और अत्याधुनिक माध्यम टीवी छापे की बुनियादी मूल्यों से काफी दूर दिखता है। उदंत मार्तंड के प्रकाशक और संपादक जुगल किशोर शुक्ल हों या बंगाल गजट निकालने वाले जेम्स ऑगस्टस हिक्की, उन्हें अखबार निकालने का गहरा युगबोध था। लेकिन उन्हें पता था कि वह जो कार्य करने जा रहे हैं, वह बेहद दुष्कर है। उनके सामने संसाधनों की ही चुनौतियां ही नहीं थी, पाठक जुटाना और अपने छापे की बात उन तक पहुंचाना भी आसान नहीं था। उन्हें आभास था कि उनकी खरी बातों को तत्कालीन विदेशी सत्ता स्वीकार नहीं करेगी। संसाधनों के अभाव और सरकारी सहयोग नहीं मिलने की वजह से ही उदंत मार्तंड असमय कालकवलित हो गया। उसे संसाधन या सरकारी सहयोग इसलिए नहीं मिले, क्योंकि उसका स्वर भारतोन्मुखी था, वह हिंदी समाज के हित के हेत निकल रहा था, उसे भारतीय मूल्यों की चिंता थी और भारतीय समाज के नवजागरण में वह भागीदार बनना चाहता था। यह कहानी उदंत मार्तंड तक ही सीमित नहीं रही। बाद के दिनों में भी हिंदी में तमाम समाचार पत्र निकले और बंद होते रहे। इस लिहाज से कह सकते हैं कि हिंदी पत्रकारिता का इतिहास नवजागरण का ही इतिहास नहीं है, अखबारों के निकलने और बंद बंद होने के सिलसिले का भी इतिहास है। लेकिन इस सिलसिले में भी समानता दिखती है, पत्रों का मूल उद्देश्य भारतीय मूल्यों, स्वाधीन सोच के लिए जागरण पैदा करना और राष्ट्र हित पर खुद को तिरोहित करना ज्यादातर पत्रों के प्रकाशन के मूल में दिखता है। कह सकते हैं कि हिंदी पत्रकारिता के जीन यानी गुणसूत्र में तिरोहित होने का ही भाव रहा है। यही वजह है कि हिंदी पत्र खतरा उठाते हुए भारतीयता की बात करना और सार्वजनिक हित का सवाल उठाना अपना पुनीत कर्तव्य मानते रहे। बेशक आज के समाचार पत्र भी सवालों के घेरे में हैं, लेकिन सवालों में आना सिर्फ अखबारी संस्थानों और उनके कर्ताधर्ताओं की सोच का ही मसला नहीं है, बल्कि उदारीकरण के बाद बढ़ी अर्थप्रधानता और पूंजी के खेल से उपजी मजबूरी भी है। फिर भी जब तुलनात्मक रूप से देखते हैं कि स्वाधीनता आंदोलन के साथ जिन मूल्यों को भारतीय समाज ने स्वीकार किया और आत्मसात किया है, उन्हें अब भी अखबारों ने ही आत्मसात कर रखा है। इनकी तुलना में टीवी की पत्रकारिता कहीं ज्यादा चंचल और चलायमान नजर आती है। पत्रकारिता के जब भी नए माध्यम सामने आए, पुराने माध्यम के खात्मे की आशंका जताई जाती रही। हालांकि नए माध्यम के किंचित गुणों के साथ प्रतियोगिता और साम्यता बरतते हुए पुराने माध्यम ने जहां खुद को ज्यादा प्रतियोगी बनाया। हर नए माध्यम के अवतार और विकास के मूल में नई तकनीक रही है। तकनीक की एक विशेषता है, हर नई तकनीक हमेशा पुरानी के मुकाबले ज्यादा प्रभावी होती है। इस लिहाज से छापे के बाद आए रेडियो ने लोगों को ज्यादा लुभाया। लेकिन रेडियो के साथ प्रतियोगिता में छापे ने हार नहीं मानी और उसके बरक्स खुद को भी पहले तुलना में ज्यादा गतिमान बनाया, अपने कंटेंट और प्रस्तुति में विविधता और नवीनता की खोज की।

बुद्ध के मुख्य शिष्यों की पवित्र विरासत

अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के अवशेष आज क्यों महत्वपूर्ण हैं?

बौद्ध परंपरा के अनुसार, सारिपुत्त और महामोग्गल्लान का जन्म वर्तमान नालंदा के पास, मगध क्षेत्र के पड़ोसी गांवों में एक ही दिन हुआ था । सारिपुत्त का जन्म उपतिस्स गांव में हुआ था

श्री विवेक अग्रवाल

बुद्ध के दो मुख्य शिष्यों - अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान - के पवित्र अवशेष 1 से 10 जून तक उलानबटोर के गंदन मठ में प्रदर्शनी के लिए भारतीय वायुसेना (ङ्करस्न) के एक विशेष विमान से मंगोलिया ले जाए जाएंगे । दो सहस्राब्दियों से अधिक समय से, बौद्ध जगत में अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के नाम अत्यधिक श्रद्धा के केंद्र रहे हैं । गौतम बुद्ध के दो मुख्य शिष्यों के रूप में, वे न केवल बुद्ध के सबसे करीबी आध्यात्मिक साथी थे, बल्कि उनके ज्ञानोदय के बाद धम्म के प्रमुख रक्षक और प्रसारक भी थे । बौद्ध परंपरा के अनुसार, सारिपुत्त और महामोग्गल्लान का जन्म वर्तमान नालंदा के पास, मगध क्षेत्र के पड़ोसी गांवों में एक ही दिन हुआ था । सारिपुत्त का जन्म उपतिस्स गांव में हुआ था, जबकि महामोग्गल्लान का जन्म कोलित गांव में हुआ था । बचपन की दोस्ती के बंधन में बंधे इन दोनों जिज्ञासुओं ने अंततः परम सत्य की खोज में एक साथ सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया । उनकी आध्यात्मिक यात्रा बुद्ध के सानिध्य में पूरी हुई, जहाँ वे जल्द ही प्रारंभिक संघ के दो सबसे प्रतिष्ठित सदस्यों के रूप में उभरे । सारिपुत्त को ज्ञान और सैद्धांतिक विश्लेषण के सर्वोच्च गुरु के रूप में जाना जाता था । बौद्ध ग्रंथ उन्हें 'असाधारण बौद्धिक स्पष्टता' और 'करुणा एवं सटीकता के साथ शिक्षाओं को समझाने की अद्वितीय क्षमता' से संपन्न बताते हैं । उन्होंने भिक्षुओं के अनुशासन की देखरेख की, ध्यान साधना का मार्गदर्शन किया और स्वतंत्र रूप से भिक्षुओं को दीक्षित करने वाले पहले अधिकृत शिष्य बने । बुद्ध के सीधे निर्देश के बाद, बुद्ध के पुत्र राहुल को सारिपुत्त द्वारा एक नवदीक्षित भिक्षु (सामनेर) के रूप में दीक्षित किया गया था । उनके नेतृत्व और धम्म पर असाधारण पकड़ के कारण, बुद्ध ने उन्हें 'धम्म का सेनापति' (धम्मसेनापति) की उपाधि दी थ । थेरवाद बौद्ध परंपरा के अनुसार, ज्ञान प्राप्त करने के बाद बुद्ध ने तावतिंस स्वर्ग में अपनी माता (जिनका वहां पुनर्जन्म हुआ था) सहित देवताओं को अभिधम्म की शिक्षा दी थी । इस अवधि के दौरान, बुद्ध हर दिन कुछ समय के लिए मानव लोक में लौटते थे, जहाँ वे सारिपुत्त को उन शिक्षाओं का सारांश सुनाते थे, और फिर सारिपुत्त उन शिक्षाओं को व्यवस्थित रूप से जन-जन तक पहुँचाते थे । इसके विपरीत, महामोग्गल्लान को ध्यान और आध्यात्मिक उपलब्धियों के अग्रणी गुरु के रूप में सम्मान प्राप्त था । बौद्ध साहित्य में उन्हें गहन ध्यान शक्तियों और अस्तित्व के विभिन्न लोकों को देखने की क्षमता से युक्त बताया गया है । देवताओं, ब्रह्मों और दुखी अवस्थाओं में कष्ट भोग रहे जीवों के साथ अपने संवादों के माध्यम से, उन्होंने कर्म के सिद्धांतों और संसार की वास्तविकताओं को स्पष्ट किया । उनकी शिक्षाओं ने अनुयायियों को मानवीय कर्मों के नैतिक और आध्यात्मिक परिणामों की स्पष्ट समझ प्रदान की । गौतम बुद्ध ने अरहंत महामोग्गल्लान पर एक शिक्षक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और प्रारंभिक संघ के रक्षक के रूप में गहरा भरोसा किया, जो अक्सर अनुशासन और सामुदायिक नेतृत्व के मामलों में बुद्ध की ओर से कार्य करते थे । उन्होंने देवदत्त द्वारा पैदा किए गए संघ-भेद (विभाजन) को दूर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे भिक्षुओं को बुद्ध के साथ फिर से एकजुट करने और बौद्ध समुदाय की एकता को बनाए रखने में मदद मिली। अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान का परिनिर्वाण बुद्ध और बौद्ध संघ के लिए एक अत्यंत भावुक क्षण था । अरहंत सारिपुत्त ने बुद्ध के महापरिनिर्वाण से कुछ समय पहले, कत्तिका/कार्तिक (अक्टूबर/नवंबर) महीने की पूर्णिमा को अंतिम मुक्ति (परिनिर्वाण) प्राप्त की, जबकि परंपरा के अनुसार अरहंत महामोग्गल्लान का परिनिर्वाण लगभग पंद्रह दिन बाद, उसी महीने की अमावस्या को हुआ था । बौद्ध परंपरा में, उन्हें आध्यात्मिक प्राप्ति का पवित्र प्रतीक और ज्ञानोदय का जीवंत स्मरण माना जाता है । इसलिए, अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के पवित्र अवशेष असाधारण महत्व रखते हैं, जो बुद्ध धम्म के त्रिरत्नों में से एक-'संघ' की साक्षात प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं । विभिन्न बौद्ध संस्कृतियों में, ये पवित्र अवशेष आज भी भक्ति, तीर्थयात्रा और आत्मचिंतन को प्रेरित करते हैं । उनका आदर प्राचीन भारत से आधुनिक विश्व तक बुद्ध की शिक्षाओं की निरंतरता का प्रतीक है । इस गहरी श्रद्धा का एक भव्य नजारा फरवरी 2024 में थाईलैंड में देखा गया, जो हाल के इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध राजकीय समारोहों में से एक था । अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के अवशेष 23 फरवरी 2024 को पहली बार भारत से बाहर गए, जब थाईलैंड ने बैंकॉक के सनम लुआंग में बुद्ध के पवित्र अवशेषों के साथ-साथ अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के अवशेषों की स्थापना के लिए एक भव्य राजकीय समारोह का आयोजन किया था । इस ऐतिहासिक आयोजन की संयुक्त अध्यक्षता सोमदेत फ्रा संघराजा सकल महा संघपरिणायक और प्रधान मंत्री स्रेत्था थाविसिन ने की थी । रॉयल थाई सरकार और भारत सरकार के सहयोग से ₹गंगा-मेकांग पवित्र बुद्ध अवशेष₹ पहल के तहत आयोजित यह प्रदर्शनी, महा वजिरालोंगकोर्न की छठी-चक्र वर्षगांठ के शुभ अवसर पर आयोजित उत्सवों का हिस्सा थी । भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (ङ्कक्चष्ट) ने भारत से भिक्षुओं और शिक्षाविदों को लाने और बैंकॉक के सिल्पकर्न विश्वविद्यालय में एक पूर्ण दिवसीय विपश्यना कार्यक्रम आयोजित करके इस प्रदर्शनी के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

इस आयोजन ने भारी जन-भक्ति और अंतर्राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया । बैंकॉक प्रदर्शनी के बाद, इन पवित्र अवशेषों को थाईलैंड के विभिन्न हिस्सों जैसे चियांग माई, उबोन रत्चाथानी और क्राबी ले जाया गया-जिससे देश के सभी क्षेत्रों के लगभग 50 लाख (5 मिलियन) बौद्धों को अवशेषों के दर्शन और श्रद्धा सुमन अर्पित करने का अवसर मिला । अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के अवशेषों को मंगोलिया ले जाने की प्रासंगिकता 'धम्म वाहक' के रूप में उनकी भूमिका में निहित है-वे प्रारंभिक संघ के ऐसे स्तंभ थे जिनका जीवन बुद्ध की शिक्षाओं के प्रसार और सुरक्षा का साक्षात उदाहरण था । उनके दो मुख्य शिष्यों के पवित्र अवशेष संसार में उस ज्ञानोदय के संरक्षण, व्याख्या और प्रसार के प्रतीक हैं । अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान गहन साधना के माध्यम से धम्म की व्यावहारिक अनुभूति का प्रतिनिधित्व करते हैं । एक साथ मिलकर, दोनों शिष्यों ने बौद्ध अभ्यास के पूरक स्तंभों को साकार किया: ज्ञान और अनुभूति, सिद्धांत और प्रत्यक्ष अनुभव । इसलिए, उनके पवित्र अवशेष उन जीवंत सिद्धांतों के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से मुक्ति संभव है, इस प्रकार वे शुद्धतम रूप में सिद्ध संघ का प्रतिनिधित्व करते हैं । उनका सम्मान करना, वास्तव में, मानव इतिहास में बुद्ध के ज्ञानोदय के सफल प्रसार का सम्मान करना है । मंगोलिया के लिए, इन अवशेषों का आगमन असाधारण अर्थ रखता है । मंगोलिया की बौद्ध पहचान ऐतिहासिक रूप से श्रद्धा, विद्वता, संन्यासी अनुशासन और ध्यान परंपरा में रची-बसी रही है । इन पवित्र अवशेषों की उपस्थिति एक पवित्र और प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करती है, जो बुद्ध धम्म की जीवंत छवि को पूर्ण करती है । मंगोलिया में उनकी उपस्थिति मंगोलियाई भिक्षु समुदाय (संघ) के लिए एक अत्यंत दुर्लभ और शुभ आशीर्वाद है

लेखक भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय में सचिव हैं

टिप्पणी

ईरान ने बुनियादी शर्तें पेश कीं

ईरान की शर्तें मानना अमेरिका के लिए अपनी हार स्वीकार करने जैसा होगा। ट्रंप ने इससे इनकार करते हुए प्रोजेक्ट फ्रीडम शुरू किया। मगर उसके दबाव में आने के बजाय ईरान ने जवाबी हमले शुरू कर दिए हैं।

अमेरिका/ इजराइल और ईरान के बीच युद्धविराम लगभग भंग हो चुका है। इसके टूटने की शुरुआत कब हुई और इसे किसने तोड़ा, इन प्रश्नों पर दोनों पक्षों की राय परस्पर विरोधी है। ईरान की दलील है कि आठ अप्रैल को लड़ाई ठहरने के बाद अमेरिका ने होरमुज जलडमरूमध्य की घेराबंदी कर युद्धविराम को पहली बार भंग किया। फिर तीन मई डॉनल्ड ट्रंप ने होरमुज जलमार्ग को जबरन खुलवाने के लिए प्रोजेक्ट फ्रीडम का एलान कर जंग का नया दौर शुरू कर दिया। ट्रंप का दावा है कि इस कार्रवाई के तहत सात ईरानी नौकाओं को नष्ट किया गया।

उधर ईरान ने जलमार्ग पार करने की कोशिश मे लगे यूएई और दक्षिण कोरिया के टैंकरों को निशाना बनाया। लगे हाथ उसने संयुक्त अरब अमीरात के तेल ठिकाने फुजैरा और दुबई में कुछ स्थलों पर भी मिसाइलें दागीं। इस तरह जंग एक नए स्तर पर पहुंच गई है। पहले से ही ऊर्जा संकट, महंगाई और कई जरूरी पदार्थों के अभाव से ग्रस्त विश्व अर्थव्यवस्था पर यह नया प्रहार है। यह तो साफ है कि ट्रंप प्रशासन बिना स्पष्ट सैन्य उद्देश्य तय किए इस लड़ाई में उतर गया। उसकी धारणा शायद यह थी कि वेनेजुएला की तरह चौंकाने वाली कार्रवाई से वह ईरान में सत्ता बदल देगा। इससे वहां के तेल भंडार अमेरिकी नियंत्रण में आ जाएंगे। मगर ये दांव गलत पड़ा।

तब से वह जंग से बाहर निकलने की राह नहीं ढूंढ पा रहा है। ट्रंप अमेरिका के विजयी होने के कथानक के साथ युद्ध खत्म करना चाहते हैं, लेकिन ईरान ने इसके अवसर से उन्हें वंचित कर रखा है। पिछले हफ्ते ईरान ने युद्ध समाप्त करने का तीन-स्तरीय फॉर्मूला अमेरिका को भेजा। इसके जरिए ईरान ने फिर अपनी बुनियादी शर्तें पेश कीं, जिन्हें मानना अमेरिका के लिए अपनी हार स्वीकार करने जैसा होगा। ट्रंप ने इससे इनकार करते हुए ईरान पर दबाव बढ़ाने की कोशिश में प्रोजेक्ट फ्रीडम शुरू किया। मगर इसके दबाव में आने के बजाय ईरान ने जवाबी हमले शुरू कर दिए हैं। उनकी चोट फिलहाल यूएई और होरमुज स्थित टैंकरों पर पड़ी है, लेकिन इसका असर सारी दुनिया तक जाएगा।

ब्लॉग

मैं दिल्ली, हर चीज़ से पहले यहाँ थी!

श्रुति व्यास

मुझे हमेशा मेरे लोगों ने बनाया। वे लोग जो बाहर से आए, जिन्होंने मुझे अपनाया और ऐसा करके मुझे बनाया। मैं हमेशा दिल वालों की दिल्ली रही हूँ। जन्म से नहीं, चुनाव से। ठहरने से। किसी कठिन चीज़ से प्रेम करने और उसे घर कहने से।ज्पर अब मुझे इतनी गहराई तक खोद दिया गया है कि मैं अपने भीतर का रिसाव सुन सकती हूँ। वे पेड़ गिरते सुनती हूँ जो दशकों से मेरे साथ खड़े थे।ज

मेरी नसों पर मेट्रो के फैल जाने से पहले। उन फ्लाईओवरों के एक दूसरे पर चढ़ते जाने से पहले, जब आसमान तक इंजीनियर किया हुआ लगने लगा था। उन मॉलों के आने से पहले, जिनमें इत्र और ठंडी हवा की गंध भरी रहती है, और जहाँ कभी पुराने सिनेमा हुआ करते थे। फीके पड़ते पोस्टर, चिपचिपी फ़र्श और देर रात तक चलती फ़िल्में। उन कैफ़े के आने से पहले, जिनके अंग्रेज़ी नाम हैं और जिन्होंने उन रेस्तराँ की जगह ले ली जहाँ वेटर पिता तक को पहचानते थे। उस समय से पहले, जब यह शहर खुद से ही अधीर होने लगा था। उस सबसे पहले, मैं यहाँ थी।

ब्रिटिशों के मेरे सीने पर अपनी सीधी, औपचारिक सड़कें खींचकर उसे नई दिल्ली कहने से पहले, मानो शहर की कल्पना सबसे पहले उन्हीं ने की हो। मुगलों के मुझे एक साथ भव्य और उदास बना देने से पहले। तुगलकों के मुझे बार बार बसाने और छोड़ने से पहले, उस बेचैनी के साथ जिसमें उन्हें खुद भी यक़ीन नहीं था कि मैं रहने लायक हूँ या नहीं। मैंने उन सबको आते देखा है। जाते भी। साम्राज्य हमेशा खुद को स्थायी मानकर आते हैं। शहर उनसे ज़्यादा जानते हैं।

1947 में मैं एक तूफ़ान से गुज़री थी। विभाजन मेरे भीतर घाव की तरह उतरा था। लाखों शरणार्थी आए। शहर की पहचान लगभग एक रात में बदल गई। फिर भी अजीब बात है, वे मेरे सबसे मुलायम साल थे। देश नया भी था, थका हुआ भी, और उम्मीद से भरा भी। मैं भी वैसी ही थी।

चाँदनी चौक में तब भी ताँगे चलते थे। लोग राजपथ पर साइकिल चलाते थे। जनपथ का कॉफ़ी हाउस तब तक खुला रहता था, जब तक कवियों और पत्रकारों के पास सिगरेट और बहस, दोनों खत्म नहीं हो जाते थे। हवा तब बस हवा थी। पानी बिना घबराहट के आता था। हर मौसम थकाता था, लेकिन सज़ा जैसा नहीं लगता था। शामें धीमी उतरती थीं। पेड़ों की छाया लंबी होती थी और सरकारी दफ्तरों से लौटते लोग बिना जल्दी के बस स्टॉपों पर खड़े दिखाई देते थे। पुरानी दिल्ली की गलियों में रात देर तक बर्तनों की आवाज़ें आती रहती थीं। नई दिल्ली अब भी अपने चौड़े रास्तों में आधी खाली लगती थी। शहर तब इतना तेज़ नहीं भागता था। उसे अभी खुद को साबित करने की उतनी बेचैनी नहीं हुई थी।

मुझे वह भी याद है। सर्दियों की धूप में गोल मार्केट के लॉन पर दौड़ते छोटे कदम। बाबा खड़क सिंह मार्ग पर स्कूल बस पकड़ने के लिए भागती हुई वह लड़की। अपने पिता का इंतज़ार करती हुई, जो उसे तालकटोरा में तैरने ले जाते थे। हरियाली से भरा मेरा पुराना मुग़ल कटोरा, रिज की धरती में आसमान की ओर खुला हुआ। उसका स्कूल अदालत, स्टेडियम और प्रगति मैदान के पास था। वहीं हर साल पुस्तक मेला लगता था और राज रेवाल की कंक्रीट जाली पूरे परिसर के ऊपर उठती दिखाई देती थी। ज्यामिति, महत्वाकांक्षा और खुद पर भरोसा करती एक पूरी पीढ़ी का आकार। उसे तब यह नहीं पता था कि वह क्या महसूस कर रही है। वह बस ऊपर देखा करती थी।

वह बड़ी हुई और मैं उसके साथ बदलती गई। हर रविवार शाम अपने भाई के साथ रेल भवन के बाहर खड़े पुराने भाप इंजन को चलाने का नाटक करती हुई। 1925 का वह दार्जिलिंग इंजन, छोटा, गरिमामय, जिसे दशकों तक वहीं रखा गया, जब तक किसी ने यह तय नहीं कर लिया कि उसकी जगह वंदे भारत की प्रतिकृति ज़्यादा उपयुक्त लगेगी। संसद सत्रों के दौरान गाड़ी का संसद मार्ग की ओर मुड़ना, और पीछे बैठी वह लड़की उस गोल, ठहरी हुई इमारत को देखती रहती, जो सड़क के इतना करीब लगती थी मानो हाथ बढ़ाकर छू सकती हो। तब भी लोगों पर विश्वास करती हुई, जिनके लिए वह बनाई गई थी।

सर्दियों की धुंध। फ़ुटपाथों पर जामुन के दाग। खुली खिड़कियों से भीतर आती बरसाती हवा। मई में पूरी सड़कों को लाल कर देने वाले गुलमोहर। ऊपर से झरते अमलतास। वह दिल्ली, जिसने खुद को लगातार साबित करना अभी शुरू नहीं किया था। वह बड़ी होती गई और मुझे अपने भीतर कहीं जमा करती गई। लेकिन आज मैं वैसी नहीं रही, जैसी मैंने खुद को उसे दिखाया था।

इस साल की गर्मी चार महीने तक बिना किसी माफ़ी के मेरे सीने पर बैठी रही। मेरे पेड़, जो हाल की कटाइयों से बच पाए, पूरी गर्मी चुप खड़े रहे। उन्होंने सुंदर दिखने की कोशिश तक छोड़ दी थी। वे बस जीवित रहने की कोशिश कर रहे थे। चाणक्यपुरी से होकर गुज़रो, तब समझोगे कि मैं कैसी थी। चौड़ी हरी सड़कें। ऊपर झुकते विशाल पेड़, जैसे कोई भरोसा सिर पर फैला हो। दिल्ली को ऐसे बनाया गया था कि वह साँस ले सके। ऐसी जगहों के साथ, जो अपनी अहमियत जानती थीं।

अब मैं राष्ट्रपति भवन के पीछे नई इमारतों को उठते देखती हूँ। ऊँची, रंगहीन और खुद पर बेहद यक़ीन से भरी हुई। लेकिन वे भरोसा नहीं बढ़ातीं। वे केवल उसे बीच में तोड़ देती हैं। मध्य दिल्ली, जिसे बाकी दुनिया लुटियंस दिल्ली कहती है, में कभी एक गरिमा थी। विरासत में मिली हुई, जटिल, राजनीति से खाली नहीं, फिर भी गरिमा। ऐसी गरिमा जो दशकों में बनती है, जिसे समारोह निभाने के लिए शोर की ज़रूरत नहीं पड़ती। राजस्थान से पत्थर काटकर उन्हें जमा देने भर से आत्मविश्वास नहीं आता। सड़कों के नाम बदल देने, इमारतों को नए नाम दे देने, कर्तव्य पथ और सेवा सदन कह देने भर से किसी शहर का स्वभाव नहीं बनता। स्वभाव धीरे धीरे बनता है। उसमें पीढ़ियाँ लगती हैं। जो आज बनाया जा रहा है, उसे माफ़ करने में भी शायद पीढ़ियाँ लगेंगी।

और फिर राजपथ है।

उसका। उनका। मेरा।

अब वह गर्म पत्थरों और डामर की लंबी पट्टी में बदल चुका है। छोटी छोटी रोशन पोखरें, जिनकी चमक मुझ पर जँचती नहीं। पीली बैरिकेडें उन सड़कों के किनारे खड़ी हैं जो कभी खुली थीं, उदार थीं, लोगों के लिए बनी थीं। बगीचों को स्मारकों में बदल दिया गया। जगह जगह मूर्तियाँ और आकृतियाँ लगा दी गईं, मानो चीज़ों से भर देने भर से किसी शहर को अर्थ मिल जाता हो।

ऐसा नहीं होता।

इससे मैं केवल ऐसी दिखती हूँ जैसे कोई खुद को भूल चुका हो और बहुत कोशिश कर रहा हो कि याद कर सके। उस सड़क पर उठती गर्मी अब केवल मरीचिका नहीं रही। वह मैं हूँ, जलती हुई।

लेकिन यह कहानी सिर्फ इमारतों या बदलते नामों की नहीं है। मैं हमेशा ऐसे बदलावों से बचती रही हूँ। जिस चीज़ से मैं शायद न बच पाऊँ, वह यह है। कहा जा रहा है कि ये बदलाव मुझे उपनिवेशवादी इतिहास से मुक्त करने के लिए किए जा रहे हैं। लेकिन उसी इतिहास ने मुझे बनाया भी था। परतों वाली, सहनशील, मेरी अपनी। और जैसे जैसे उसे हटाया जा रहा है, मैं खुद को भीतर से बिखरता महसूस करती हूँ।

मुझे इतनी गहराई तक खोदा गया है कि मैं अपने भीतर का रिसाव सुन सकती हूँ। वे पेड़ गिरते सुनती हूँ जो दशकों से मेरे साथ खड़े थे। अपनी नदियों को घुटते देखती हूँ। धूल को उठते महसूस करती हूँ। मौसमों की धूल नहीं, बल्कि तोड़े जाने की वह धूसर धूल, जिसे निर्माण का नाम दिया गया है। वह मेरी आँखों में भर जाती है, फेफड़ों में उतरती है, हर चीज़ पर बैठ जाती है।

मैं कभी भरपूर थी। मैं चाहती हूँ कि जो लोग मुझे अब जानते हैं, थकी हुई, धूल से भरी, किनारों से टूटती हुई, वे जानें कि मैं कभी फूलों, छाँव और इतने चौड़े फ़ुटपाथों की शहर थी कि उन पर सचमुच चला जा सके। ऐसी सर्दियों की शहर, जो हर चीज़ को माफ़ कर देती थीं। ऐसी बारिशों की, जो हर चीज़ को नया बना देती थीं। और उन लोगों की, जिनमें एक अजीब सी जीवंतता थी। लगभग लापरवाह। खुद पर यक़ीन करती हुई। जगह घेरने से न डरने वाली। ज़ोर से हँसने वाली। देर तक बाहर रहने वाली। भीतर कहीं यह महसूस करती हुई कि शहर उनके साथ खड़ा है। मुझे हमेशा मेरे लोगों ने बनाया। वे लोग जो बाहर से आए, जिन्होंने मुझे अपनाया और ऐसा करके मुझे बनाया। मैं हमेशा दिल वालों की दिल्ली रही हूँ। जन्म से नहीं, चुनाव से। ठहरने से। किसी कठिन चीज़ से प्रेम करने और उसे घर कहने से।

कुछ हफ्ते पहले एक पत्रकार मेरी सड़कों पर घूम रही थी। वह लोगों से सिर्फ एक सवाल पूछ रही थी। क्या तुम भी थक गए हो? मुझे उसके जवाबों का इंतज़ार नहीं करना पड़ा। मैं यह हर जगह सुनती हूँ। हवाई अड्डों की बातचीत में। माता पिता की उस सलाह में, जिसमें वे बच्चों से कहीं और बस जाने को कहते हैं। पुरानी दिल्ली के उन परिवारों में, जो आखिरकार वे घर बेच रहे हैं जिनके भीतर कभी मरने तक रहने का यक़ीन था। युवाओं की आवाज़ में, जो मेरे बारे में वैसे बात करते हैं जैसे किसी ऐसे रिश्ते के बारे में की जाती है जिसे बहुत लंबे समय तक प्रेम किया गया हो और अब निभाना मुश्किल हो गया हो।

मैं उसे भी सुनती हूँ। हर गर्मियों की सुबह खिड़की से सिर बाहर निकालकर पूछते हुए, पानी आया क्या। दिसंबर की ठंडी सुबह अपने ड्रॉइंग रूम में एयर प्यूरीफ़ायर का फ़िल्टर बदलते हुए, जबकि साफ़ हवा वाले शहरों में रहने वाले उसके दोस्त बाहर खुली हवा में साँस लेते हुए तस्वीरें भेजते हैं।

वह अब भी मुझसे प्रेम करती है। यही बात सबसे कठिन है। क्योंकि जिस शहर से उसके लोग प्रेम तो करें, लेकिन उसके भीतर रह न पाएँ, वह धीरे धीरे शहर से याद में बदलने लगता है।

मुझसे पहले आने वाला हर राजवंश मुझे चाहता था, तब भी जब उसने मुझे तोड़ा। आज बात अलग है। अब उदासीनता प्रगति की भाषा बोलकर आती है। और उदासीनता, मैं अब समझ रही हूँ, विनाश से कहीं अधिक कठिन होती है। क्योंकि उसमें चीज़ें एक दिन में नहीं टूटतीं। वे लोगों की आदतों से चुपचाप गायब होने लगती हैं।

शायद इसी वजह से वह अब भी मुझे अपने भीतर लिए घूमती है। जैसे लोग कुछ ऐसी चीज़ें उठाए रहते हैं जिन्हें न पूरी तरह छोड़ सकते हैं, न ठीक से समझ सकते हैं। दौड़ते कदमों के नीचे बजरी की चरमराहट। पहली बारिश के बाद भीगी मिट्टी की गंध। प्रगति मैदान से किताबें उठाकर ले जाते पिता। खुले आसमान के सामने कंक्रीट की जाली को देखती एक बच्ची।

मैं हर चीज़ से पहले यहाँ थी। लेकिन पहली बार मुझे यक़ीन नहीं है कि पुराना होना स्थायी होने जैसा भी होता है। कि हर बार बच जाना सचमुच बचा रह जाना होता है।

मैं बस इतना चाहती हूँ कि इसके बाद भी मैं यहाँ रहूँ।

'खोड़ा में बसाए नहीं खुद बसे हैं जिहादी मानसिकता के लोग', सूर्या के परिवार से मिले संगीत सोम

आर्यावर्त संवाददाता

गाजियाबाद। गाजियाबाद में ईद उल अजहा पर युवक सूर्या चौहान की चाकू से गोदकर हत्या कर दी गई। आरोपी असद को रविवार की सुबह पुलिस ने मुठभेड़ में ढेर कर दिया। इस कार्रवाई के बाद उत्तर प्रदेश में सियासी हलचल तेज हो गई है। इस बीच भाजपा नेता संगीत सोम आज सूर्या के परिवार से मिले।

जानकारी के मुताबिक, 'सोमवार दोपहर भाजपा से पूर्व विधायक संगीत सोम सूर्या के परिवाई से मिलने गाजियाबाद के खोड़ा पहुंचे। उन्होंने कहा कि खोड़ा में जिहादी मानसिकता के लोग खुद आकर बसे हैं। कहा कि सूर्या की हत्या पर आखिर क्यों किसी धार्मिक प्रचारक या धर्म गुरु ने आवाज नहीं उठाई। इससे उनकी मानसिकता का पता चलता है। उन्होंने कहा कि एक आरोपी ऊपर जा चुका है बाकी भी जाएंगे। बुल्डोजर भी चलेगा। इसके साथ ही पीड़ति परिवार को एक लाख रुपये की आर्थिक मदद की भी घोषणा की है।

सूर्या की हत्या का आरोपी असद मुठभेड़ में ढेर

बकरीद के दिन गाजियाबाद के खोड़ा में 11वीं के छात्र सूर्या प्रताप (17) की हत्या का मुख्य आरोपी असद (19) शनिवार देर रात पुलिस मुठभेड़ में मारा गया। वसुंधरा-खोड़ा मार्ग पर घिरने के बाद असद ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी, जवाबी गोलीबारी में वह घायल हो गया। अस्पताल में चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस के अनुसार, असद गाजियाबाद से भागने की फिराक में था। इसके लिए दोस्तों से रुपये लेने जा रहा था। डीसीपी धवल जायसवाल ने बताया कि असद पर 50 हजार रुपये का इनाम घोषित था। शनिवार रात सूचना मिली थी कि वह खोड़ा आ रहा है। सभी प्रमुख मार्गों पर बैरिकेडिंग कर चेकिंग शुरू की गई। देर रात करीब दो बजे वसुंधरा की ओर से आ रहे बाइक सवार को रुकने का इशारा किया गया तो उसने पुलिस पर फायरिंग करते हुए भागने की कोशिश की। पीछा करने के दौरान भी उसने कई फायर किए। तब पुलिस को गोली चलानी पड़ी। उसकी पहचान असद के रूप में हुई। मुठभेड़ में सिपाही अनुराग रावत भी घायल हुए, जिनका उपचार चल रहा है। असद के पास देसी पिस्टल, कारतूस व दिल्ली से चोरी की बाइक बरामद की गई है।

पुलिस ने बताया, असद की मां, भाई और भाभी घर छोड़कर चले गए हैं। खोड़ा के नवनीत विहार निवासी सूर्या को 28 मई को बकरीद पर कुर्बानी दिखाने के बहाने असद ने बुलाया था। इसी दौरान उसने चाकू घोंपकर उसे लहूलुहान कर दिया। अगले दिन अस्पताल में सूर्या ने दम तोड़ दिया था।

हत्या के लिए उकसाने वाले पिता को भेजा जेल

पुलिस ने शनिवार को ही असद के पिता नवाब और दो दोस्तों फरहान व आतिफ को गिरफ्तार कर लिया था। रविवार को कोर्ट ने उन्हें जेल भेज दिया। एसीपी अभिषेक श्रीवास्तव के अनुसार, फरहान ने बताया, बाइक चलाने को लेकर असद और सूर्या में विवाद हुआ था। उसके पिता नवाब ने हत्या के लिए उकसाया, वहीं चाकू का इंतजाम फरहान ने किया। इसके बाद साजिश रचकर सूर्या को बुलाया गया

परिवार को पांच लाख की आर्थिक मदद, एक सदस्य को रोजगार

जिलाधिकारी रवींद्र मांदड़ ने बताया, मुख्यमंत्री कोष से सूर्या के परिवार के लिए 5 लाख रुपये की मदद स्वीकृत की है। परिवार के एक सदस्य को नगर पालिका के जरिये रोजगार दिया जाएगा।

एलपीजी सिलेंडर के दाम बढ़े, कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर बोला हमला

सुलतानपुर। कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर के दामों में एक बार फिर बढ़ोतरी किए जाने पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार के समय भाजपा नेताओं को महंगाई डायन नजर आती थी, लेकिन आज वही महंगाई उनके लिए डार्लिंग बन गई है। राणा ने कहा कि लगातार बढ़ती महंगाई से आम जनता, छोटे व्यापारी, होटल-रेस्टोरेंट संचालक और मध्यम वर्ग परेशान हैं। पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस और दैनिक जरूरत की वस्तुओं के दाम लगातार बढ़ रहे हैं, लेकिन सरकार जनता को राहत देने के बजाय केवल प्रचार में व्यस्त है।उन्होंने कहा कि कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर के दाम में हुई नई बढ़ोतरी का सीधा असर बाजार और आम उपभोक्ताओं पर पड़ेगा। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार की आर्थिक नीतियों का बोझ आम जनता पर डाला जा रहा है।

डायरिया रोकथाम व प्रबंधन का संदेश घर-घर पहुंचाएं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता

आर्यावर्त संवाददाता

बदायूं। जनपद में डायरिया नियंत्रण और रोकथाम को लेकर स्वास्थ्य विभाग हरसम्भव तैयारी में जुटा है। इसी क्रम में जिला स्वास्थ्य समिति के तत्वावधान में पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया (पीएसआई इंडिया) एवं केनव्यू के सहयोग से 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम के तहत जनपद की आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का उन्मुखीकरण किया जा रहा है। विकास खंड बिसौली के सभागार में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन सोमवार को करीब 170 आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को अलग-अलग सत्रों में डायरिया की रोकथाम, पहचान एवं प्रभावी प्रबंधन संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई।

इस मौके पर प्रतिभागियों को बच्चों में डायरिया के लक्षणों की शीघ्र पहचान, ओआरएस एवं जिंक के सही उपयोग, स्वच्छ पेयजल के महत्व, हाथ धोने की सही विधि तथा व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्वच्छता संबंधी व्यवहारों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि डायरिया बच्चों में होने वाली एक सामान्य लेकिन गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, समय पर उपचार एवं उचित देखभाल के माध्यम से प्रभावी बचाव संभव है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को समुदाय स्तर पर जागरूकता बढ़ाने तथा प्रत्येक परिवार तक डायरिया रोकथाम एवं प्रबंधन संबंधी संदेश पहुंचाने के लिए प्रेरित किया गया। ज्ञात हो कि इससे पहले विकास खंड बिल्सी की आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का उन्मुखीकरण करते हुए डायरिया की रोकथाम, पहचान एवं प्रभावी प्रबंधन संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई है।

'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समुदाय को डायरिया के प्रति जागरूक बनाना, बच्चों में होने वाली जटिलताओं एवं मृत्यु के जोखिम को कम करना तथा ओआरएस एवं जिंक के उपयोग को बढ़ावा देना है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उनके माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी संदेश घर-घर तक प्रभावी ढंग से पहुंचाए जा सकते हैं।

कार्यक्रम में विकासखंड बिसौली की बाल विकास परियोजना अधिकारी (सीडीपीओ) अल्पना जौहरी तथा पीएसआई इंडिया से शशांक दुबे एवं दानिश वार सहित बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग के अधिकारी एवं

पत्रकार को फर्जी बताने और छवि धूमिल करने पर मानहानि नोटिस

अखण्डनगर/सुल्तानपुर। स्थानीय पत्रकार अनुराग त्रिपाठी को सोशल मीडिया पर कथित रूप से फर्जी पत्रकार और चोर कहकर उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल करने के मामले में एक व्यक्ति को तीन लाख रुपये की मानहानि का कानूनी नोटिस भेजा गया है। नोटिस में सार्वजनिक माफी न मांगने पर सक्षम न्यायालय में वाद दायर करने की चेतावनी दी गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पत्रकार अनुराग त्रिपाठी द्वारा जारी नोटिस में आरोप लगाया गया है कि 27 मई 2026 को सुबह लगभग 11.22 बजे ऋषि तिवारी पुत्र लालमणि, निवासी ग्राम बड़गांव, थाना अखण्डनगर जनपद सुल्तानपुर ने व्हाट्सएप ग्रुप अहिलर बाबा ट्रस्ट में उनके मोबाइल नंबर से आपत्तिजनक और भ्रामक संदेश प्रसारित किया। बताया गया कि उक्त संदेश में अनुराग त्रिपाठी को चोर" एवं फर्जी पत्रकार कहा गया, जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और पत्रकारिता की छवि को गंभीर क्षति पहुँची है।

विधानसभा चुनाव से पहले मायावती का बड़ा कदम, अलीगढ़ मंडल में बसपा संगठन में बदलाव

आर्यावर्त संवाददाता

अलीगढ़। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती द्वारा अलीगढ़ मंडल पर पदाधिकारियों में फेरबदल किया गया है। कुछ की जिम्मेदारी बढ़ाई गई हैं तो कुछ की सीमित भी की गई हैं। बसपा जिलाध्यक्ष रतनदीप सिंह ने बताया कि संगठन को मजबूत करने के लिए रविवार रात करीब 10.30 बजे लखनऊ से फोल्डर जारी किया गया है।

आगरा से विक्रम सिंह जाटव, कासगंज से अनिल बघेल, अलीगढ़ से विजेंद्र सिंह विक्रम, सुरेश गौतम एडवोकेट, मनीष अहमद गाजी, रणबीर सिंह कश्यप एवं राजू रामरतन एटा को अलीगढ़ मंडल जोन प्रभारी नियुक्त किया गया है।

हरेंद्र अब हाथरस जिला की कमान संभालेंगे

अलीगढ़ जिला में अशोक सिंह एडवोकेट व मोरध्वज कुशवाहा गतिविधियों को संभालेंगे। हरेंद्र जिला अलीगढ़ देख रहे थे, अब ये हाथरस जिला की कमान संभालेंगे। मुनीश अहमद गाजी अभी पूरा मंडल देख रहे थे, ये अब अलीगढ़ व हाथरस जनपद का संगठनात्मक कार्य देखेंगे। इनके साथ सुरेश गौतम एडवोकेट को भी अलीगढ़ व हाथरस की जिम्मेदारी दी है।

सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का आभार व्यक्त किया। कहा कि वे बसपा नीतियों व डॉ. भीमराव आंबेडकर के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का काम करेंगे।

हल्द्वानी में सुल्तानपुर के खिलाड़ियों का जलवा

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। खिलाड़ियों ने उत्तराखंड के हल्द्वानी में आयोजित 13वीं ओपन नेशनल ताइक्वांडो चौंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन कर जिले का नाम रोशन किया। 29 से 31 मई तक इंदिरा गांधी इंटरनेशनल स्पोर्ट्स स्टेडियम में आयोजित इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में अमीना ताइक्वांडो अकादमी के खिलाड़ियों ने दो स्वर्ण और चार कांस्य पदक सहित कुल छह पदक अपने नाम किए। प्रतियोगिता में देशभर से खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था।

44 किलोग्राम भार वर्ग में प्रज्वल यादव ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीता। वहीं 38 किलोग्राम सब जूनियर वर्ग में मान्यता ने स्वर्ण पदक हासिल कर अकादमी और जिले का गौरव बढ़ाया। कांस्य पदक जीतने वाले खिलाड़ियों में प्रियांशु तिवारी (78 किलोग्राम जूनियर वर्ग), सत्यांश आर. श्रीवास्तव (41 किलोग्राम सब जूनियर वर्ग), साक्षी (63 किलोग्राम जूनियर वर्ग) और यथार्थ मौर्य (41 किलोग्राम सब जूनियर वर्ग) शामिल रहे। खिलाड़ियों की इस उपलब्धि पर अकादमी की प्रशिक्षिका अमीना बानो और अभिभावकों ने खुशी जताई। उन्होंने इसे खिलाड़ियों के कठिन परिश्रम, अनुशासन और नियमित प्रशिक्षण का परिणाम बताया। अमीना ताइक्वांडो अकादमी के अध्यक्ष शिवकुमार सिंह, उपाध्यक्ष डॉ. सुधाकर सिंह, कोषाध्यक्ष एडवोकेट मदन सिंह तथा सदस्य कांति सिंह सहित खेल जगत से जुड़े लोगों ने विजेता खिलाड़ियों और प्रशिक्षिका अमीना बानो को बधाई दी।

गिरोह की सप्लायर सीता का आइवीएफ सेंटरों से जुड़ा कनेक्शन, पुलिस ने खंगाला फोन तो हुआ चौंकाने वाला खुलासा

आर्यावर्त संवाददाता

बरेली। मानव तस्करी गिरोह का कनेक्शन देश के कई नामचीन आइवीएफ सेंटरों से जुड़ रहा है। गिरोह की मुख्य सप्लायर सीता के फोन में कई आइवीएफ सेंटरों से बातचीत सामने आई है। पुलिस को उसके फोन से कई ऐसे साक्ष्य भी मिले हैं जो इन सेंटरों से तस्करी के तार जुड़ने की ओर इशारा कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि नर्स सीता सेंटरों पर आने वाले दंपतियों से बातचीत कर उन्हें बच्चे उपलब्ध कराने का झांसा देती थी। उसके कई गुर्गे देश के अलग अलग सेंटरों पर तैनात हैं।

मनौना धाम से 24 मई को डेढ़ साल के मासूम ऋषभ का अपहरण करने वाले योगेश कन्नौजिया और पवन सिंह को पुलिस ने पकड़ा तो पूरा गिरोह सामने आ गया। पूछताछ से स्पष्ट हुआ कि दोनों आरोपितों से लखीमपुर निवासी उत्तम ने बच्चा चोरी करने को कहा था। पुलिस ने जब उत्तम बाजपेई को गिरफ्तार कर पूछताछ की तो उसने बताया कि उसने सीतापुर के मोहाली निवासी फर्जी डॉक्टर संजय विश्वास और लखीमपुर खीरी के मैगलगंज निवासी फर्जी डाक्टर केशवराम उर्फ मंजेश के कहने पर ही यह बच्चा चोरी कराया था। इसके बदले में उसने दोनों आरोपितों योगेश और पवन से 60 हजार रुपए में डील की थी।

पुलिस ने संजय और केशवराम उर्फ मंजेश को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में उन्होंने बताया कि यह बच्चा उन्हें बरेली के एक मेडिकल कालेज में काम करने वाली नर्स सीता को देना था। पूछताछ में स्पष्ट हुआ कि इस गिरोह की मुख्य सप्लायर सीता ही है। वह मूलरूप से दातागंज (बदायूं) की रहने वाली है जो हाल में मीरगंज में रह रही है। वही लोगों को बच्चा दिलाने की डील करती है और बाद में कभी उत्तम तो कभी फर्जी डाक्टरों से बात कर बच्चा उपलब्ध कराने को कहती थी।

> बच्चों की मुख्य सप्लायर सीता कुछ आइवीएफ सेंटरों के संपर्क में थी। आशंका है कि वहां पर भी इसके गिरोह के कुछ सदस्य हो सकते हैं जिनके माध्यम से डील होती होगी। सभी की जांच जारी है। कुछ अहम सबूत सीता के फोन से मिले हैं।
> -अंशिका वर्मा, एसपी साउथ।

सीता ने इस बार पांच लाख रुपए में बच्चा उपलब्ध कराने को कहा था जिसमें से उत्तम को 1.20 लाख मिलने थे मगर बच्चे की उम्र अधिक होने की वजह से पूरी कहानी बिगड़ गई। पुलिस ने जब सीता का फोन खंगाला तो पता चला कि देश के कई नामचीन आइवीएफ सेंटरों से उसकी बातचीत होती थी। साथ ही यह भी जानकारी मिली है कि सीता के गुर्गे सेंटरों में लगे हुए हैं जो बिना आइवीएफ के भी बच्चा दिलाने की डील करते हैं। ऐसे में पुलिस का कहना है कि अभी गिरोह के अन्य सदस्यों की भी इस मामले में गिरफ्तारी की जाएगी। सीता यह बच्चा किसे देने वाली थी इसकी भी जांच जारी है।

पुलिस की पूछताछ और जांच से स्पष्ट हुआ कि दलाल उत्तम सिर्फ मानव तस्करी गिरोह में ही काम नहीं करता था बल्कि वह लोगों को होमगार्ड की नौकरी दिलाने के नाम पर भी ठगी करता था। आरोपित के फोन से कई फर्जी नियुक्ति पत्र और तमाम लोगों को फोटो आदि मिले हैं। पूछताछ में भी उसने यह बात स्वीकारी थी। इस मामले में पुलिस आगे की जांच कर रही है।

शादीशुदा संग इश्क लड़ा रही थी महिला, पत्नी ने ऐसे उतारा प्यार का भूत, पति भी हो गया शर्म से पानी-पानी

आर्यावर्त संवाददाता

आगरा। उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक पत्नी ने अपने पति को उसकी प्रेमिका के साथ होटल में देख लिया। इसके बाद क्या था। पत्नी इस कदर भड़क गई कि उसने किसी को नहीं देखा। वो पति की प्रेमिका पर टूट पड़ी। बीच सड़क पर उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान प्रेमिका ने भी अपने बचाव में हाथापाई की। इस दौरान महिला के कपड़े तक फट गए, लेकिन उसका गुस्सा शांत होने का नाम नहीं ले रहा था। यहां से गुजर रहे लोगों ने ये दृश्य देखा, तो वो भी तमाशा देखने के लिए खड़े हो गए। पत्नी और प्रेमिका की लड़ाई के बीच पति के पसीने छूट गए। वहीं इस घटना का कुछ लोगों ने वीडियो बना लिया, जो अब शोसल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। ये मामला ताजगंज थाना क्षेत्र के टीडीआई माल के पीछे का है। बताया जा रहा है कि यहां एक विवाहिता ने अपने पति को उसकी प्रेमिका के साथ देख लिया। वो इस कदर भड़क गई कि उसने पहले तो पति को खरी खोटी सुनाना शुरू कीं। इसके बाद वो पति की प्रेमिका पर झपट पड़ी। उसने प्रेमिका के साथ हाथापाई शुरू कर दी। इस दौरान पत्नी ने प्रेमिका की स्कूटी को सड़क पर पटक दिया। फिर क्या था दोनों में मारपीट होने लगी। एक दूसरे को दोनों ही महिलाएं भद्दी-भद्दी गालियां देती नजर आईं। बीच सड़क पर दोनों में इस कदर मारपीट हुई कि लोगों की भीड़ जुट गई। मारपीट के दौरान एक महिला के कपड़े तक फट गए। वहीं वायरल वीडियो में ये भी देखा जा सकता है कि किस तरह प्रेमिका ने खुद के बचाव के लिए सड़क से ईंट उठा ली।

'गलती हो गई, 20-21 लाख ले लो, केस रफा-दफा कर दो', मासूम का पटककर कत्ल करने वाला मांगता रहा मदद

आर्यावर्त संवाददाता

फिरोजाबाद। फिरोजाबाद के शिकोहाबाद की यादव कॉलोनी में डेढ़ साल के मासूम आरव की बेरहमी से हत्या करने वाले आरोपी विराज उर्फ जितेंद्र पाठक का एक ऑडियो पीड़ित परिवार ने पुलिस के साथ साझा किया है। इस ऑडियो में साफ सुना जा सकता है कि वारदात को अंजाम देकर भागने के बाद आरोपी पुलिस कार्रवाई से बचने के लिए पीड़ित परिवार के सामने रुपयों का प्रलोभन दे रहा था और मामले को रफा-दफा करने की मिन्नतें कर रहा था। यह फोन कॉल आरोपी विराज ने मृत बच्चे की मां रती के नोएडा (सेक्टर-44) निवासी मौसा पंकज शर्मा को किया था। लगभग सवा दो मिनट के इस ऑडियो में आरोपी लगातार अपनी गलती स्वीकार करते हुए मदद की गुहार लगा रहा है।

ऑडियो में आरोपी विराज कहता है, मुझसे गलती हुई है, मैं अपनी गलती मानता हूं। लेकिन अगर यह पुलिस केस का मामला सामने आया, तो फिर बहुत से मामले सामने आ जाएंगे, जिससे बाद में आपको भी परेशानी होगी।

जब मौसा पंकज शर्मा ने उसे डांटते हुए पूछा कि तुम यह धमकी किसे दे रहे हो, तो आरोपी डरते हुए बोला, मैं धमकी नहीं दे रहा, सच बता रहा हूं। प्लीज आप मेरी मदद कीजिए। मेरे पास नगद 20-21 लाख रुपये घर पर रखे हैं, मैं इस मामले में वह पूरा पैसा छोड़ने को तैयार हूं।

हत्या को एक्सीडेंट बताने की नाकाम कोशिश

बातचीत के दौरान जब मौसा पंकज शर्मा ने उससे तीखे सवाल किए कि जब हादसा हुआ तो तुम उस जगह से भाग क्यों रहे हो? तुम बच्चे को साथ लेकर गए थे, तो तुम उसे छोड़कर क्यों भागे? इस पर शातिर आरोपी ने अपनी हैवानियत को छुपाने के लिए इसे हादसे का रूप देने की कोशिश की। उसने कहा, वह एक एक्सीडेंट था मौसा जी, जो होना था वह हो गया। जब उससे पूछा गया कि अगर एक्सीडेंट था तो तुम्हें चोट क्यों नहीं आई, तो उसने खुद को भी चोट लगने का झूठा दावा किया।

ऑडियो में आरोपी अपनी जान पहचान का रौब दिखाते हुए यह भी कहता है कि उसे किसी विधायक या मंत्री से मदद मांगने की जरूरत न पड़े, इसलिए मौसा जी आप ही बीच में पड़कर मामला संभाल लीजिए। उसने यह भी कहा कि वहां खड़े रहना बेवकूफी होती और यह पूरा इलाका उसी के क्षेत्र में आता है। हालांकि, इस बातचीत के कुछ ही घंटों बाद मुस्तैद फिरोजाबाद पुलिस ने भुड़ा भरतरा रोड पर हुई मुठभेड़ के दौरान आरोपी के दोनों पैरों में गोली मारकर उसे सलाखों के पीछे पहुंचा दिया।

एसएसपी ने तय किया 15 दिन में चार्जशीट और दो महीने में फांसी दिलाने का लक्ष्य

आरव हत्याकांड में पुलिस ने आरोपी विराज उर्फ जितेंद्र पाठक को सख्त से सख्त सजा दिलाने के लिए कमर कस ली है। एसएसपी ने थानेदार अनुज कुमार को लक्ष्य दिया है कि 15 दिन के भीतर कोर्ट में चार्जशीट दाखिल करें और अगले दो महीने के अंदर फास्ट ट्रैक ट्रायल के जरिए आरोपी को फांसी के फंदे तक पहुंचाएं।

इस जघन्य अपराध के आरोपी को किसी भी सूरत में जेल से जमानत न मिल पाए। इसके लिए मुकदमे को कानूनी रूप से बेहद मजबूत बनाया जा रहा है। एसएसपी आदित्य लांग्हे ने साफ तौर पर कहा है कि आरोपी को ऐसी सजा दिलाई जाएगी, जो समाज में एक नजीर साबित होगी।

सीसीटीवी फुटेज सबसे अहम साक्ष्य

फिलहाल पुलिस की विभिन्न टीमें इस मामले से जुड़े सभी वैज्ञानिक और चश्मदीद साक्ष्यों को तेजी से इकट्ठा करने में जुटी हैं। इस पूरे केस में मासूम बच्चे को जमीन पर बेरहमी से पटकने का जो सीसीटीवी फुटेज सामने आया है, उसे पुलिस सबसे अहम और अकाट्य सबूत मान रही है। इसके साथ ही आरोपी की कॉल डिटेल और पीड़ित परिवार को दी गई धमकियों को भी साक्ष्य के तौर पर कोर्ट के सामने पेश किया जाएगा।

अस्पताल के बेड पर पानी के लिए गिड़गिड़ाया मासूम का कातिल विराज

आरोपी विराज उर्फ जितेंद्र पाठक का जिला अस्पताल से एक और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। मुठभेड़ के दौरान दोनों पैरों में गोली लगने के बाद जिला अस्पताल के बेड पर लेटा शातिर कातिल विराज वीडियो में पानी के लिए तड़पता और सुरक्षाकर्मियों से पानी मांगता नजर आ रहा है। अब सामने आए नए वीडियो में उसका वह आक्रामक रवैया गायब है और वह दर्द से कराहते हुए पानी की मांग कर रहा है। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, आरोपी विराज पर चौबीसों घंटे पैनी नजर रखी जा रही है।

यह हुई थी वारदात

शिकोहाबाद की यादव कॉलोनी में शनिवार दोपहर विराज उर्फ जितेंद्र पाठक ने रिश्ते की भाभी रती से शादी करने की जिद पूरी न होने पर उसके डेढ़ साल के मासूम बेटे आरव को सड़क पर बेरहमी से आठ बार पटक-पटककर मार डाला था। यह पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई थी।

पुलिस ने मुठभेड़ के बाद आरोपी को गिरफ्तार देर रात ही गिरफ्तार कर लिया था। उसके दोनों पैरों में गोली लगी है। मूल रूप से अरांव निवासी रती देवी की शादी फरवरी 2024 में बदायूं निवासी सुमित कुमार से हुई थी।

पति से अनबन के कारण वह पांच महीने से मायके में रह रही थी। इसी बीच सुमित के फुफेरे भाई विराज उर्फ जितेंद्र पाठक निवासी शेखूपुर, बदायूं ने रती के सामने शादी का प्रस्ताव रखा, जिसे रती ने ठुकरा दिया था। शनिवार को रती अपनी मां पिंकी देवी के साथ कानूनी राय लेने शिकोहाबाद आई थी। आरोपी विराज भी वहां पहुंच गया था। मासूम आरव को टॉफी दिलाने के बहाने बाहर ले गया था। घर से 50 मीटर दूर सुनसान सड़क पर उसने मासूम को 27 सेकंड के भीतर लगातार 8 बार पक्की सड़क पर पटका। बच्चे की मौत के बाद वह शव को दरवाजे पर फेंककर भाग गया था।

लंबे समय तक रहना चाहते हैं हेल्दी, तो आज से ही डाइट में शामिल करें ये न्यूट्रिएंट्स से भरपूर फूड्स

नेशनल न्यूट्रिशन वीक को मनाने का मुख्य उद्देश्य बेहत पोषण के प्रति लोगों को जागरूक करना है। हर व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए खानपान की हेल्दी आदतों को अपनाना चाहिए। अगर आप अपनी डाइट में न्यूट्रिएंट्स रिच फूड्स शामिल करते हैं तो कई गंभीर बीमारियों से बच सकते हैं। तो आइए जानते हैं फिट रहने के लिए किन चीजों का सेवन करना चाहिए।

हर साल 1 सिंतबर से 7 सितंबर तक नेशनल न्यूट्रिशन वीक यानी राष्ट्रीय पोषण सप्ताह मनाया जाता है। इसे मनाने का मुख्य उद्देश्य है कि लोग अपनी हेल्थ और खानपान को लेकर जागरूक रहें। सेहतमंद रहने के लिए डाइट में न्यूट्रिएंट्स से भरपूर खाद्-पदार्थों को शामिल करना बेहद जरूरी है।

साल 1975 में नेशनल न्यूट्रिशन वीक की शुरुआत अमेरिकन डायटेटिक एसोसिएशन (एडीए) द्वारा की गई थी। इस सप्ताह का उद्देश्य संतुलित आहार और हेल्दी लाइफस्टाइल के फायदों के बारे में लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाना है। हर व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए खानपान की अच्छी आदतों को अपनाना चाहिए। अगर आप अपनी डाइट में अनहेल्दी चीजों को शामिल करते हैं, तो इससे आप कई गंभीर बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। तो आइए जानते हैं, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए डाइट में किन पौष्टिक चीजों को शामिल करना बेहद जरूरी है।

सेहतमंद रहने के लिए डाइट में शामिल करें ये चीजें

पालक

पोषक तत्वों से भरपूर पालक सेहत संबंधी कई समस्याओं को दूर करने में मदद करता है। इसमें विटामिन-ए, विटामिन-सी, विटामिन-के, आयरन, कैल्शियम, फाइबर जैसे तमाम पोषक तत्व पाए जाते हैं। जो इम्यून सिस्टम तो मजबूत रखता है। यह हड्डियां और पाचन को स्वस्थ रखने में भी मददगार है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पालक को डेली डाइट का हिस्सा जरूर बनाएं।

क्विनोआ

क्विनोआ प्रोटीन का समृद्ध स्रोत है। इसमें फाइबर, आयरन और मैग्नीशियम की अधिक मात्रा होती है। यह वेट कंट्रोल करने में भी मददगार है। इसके अलावा यह पाचन को भी बढ़ावा देता है। साथ ही रक्त शर्करा के स्तर में भी सुधार करता है।

बादाम

बादाम में हेल्दी फैट्स, फाइबर और विटामिन-ई पाए जाते हैं, जो हृदय स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं। नियिमित रूप से सीमित मात्रा में बादाम खाने से स्किन भी ग्लो करती है।

स्वीट पोटेटो

स्वीट पोटेटो विटामिन-ए, विटामिन-सी, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं। ये आंखों के स्वास्थ्य में सुधार करता है। स्वीट पोटेटो खाने से इम्युनिटी भी मजबूत होती है, जिससे आप कई बीमारियों से बच सकते हैं।

दाल

दाल सेहत के लिए काफी फायदेमंद माना जाती हैं। ये प्रोटीन, फाइबर, आयरन और फोलेट का समृद्ध स्रोत होती हैं। दाल हेल्दी डाइट का अहम हिस्सा है। आप अपनी डाइट में मसूर, दाल, मूंग दाल, अरहर दाल आदि शामिल कर सकते हैं।

ब्रोकली

विटामिन-सी और विटामिन-सी के, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर ब्रोकली आपकी सेहत के लिए बेहद लाभदायक है। यह सब्जी हड्डियों के स्वस्थ रखने में भी सहायता करती है।

जिंदगी के जंजाल में बेहद जरूरी है दिमागी सुकून, आप भी अपना सकती हैं ये उपाय

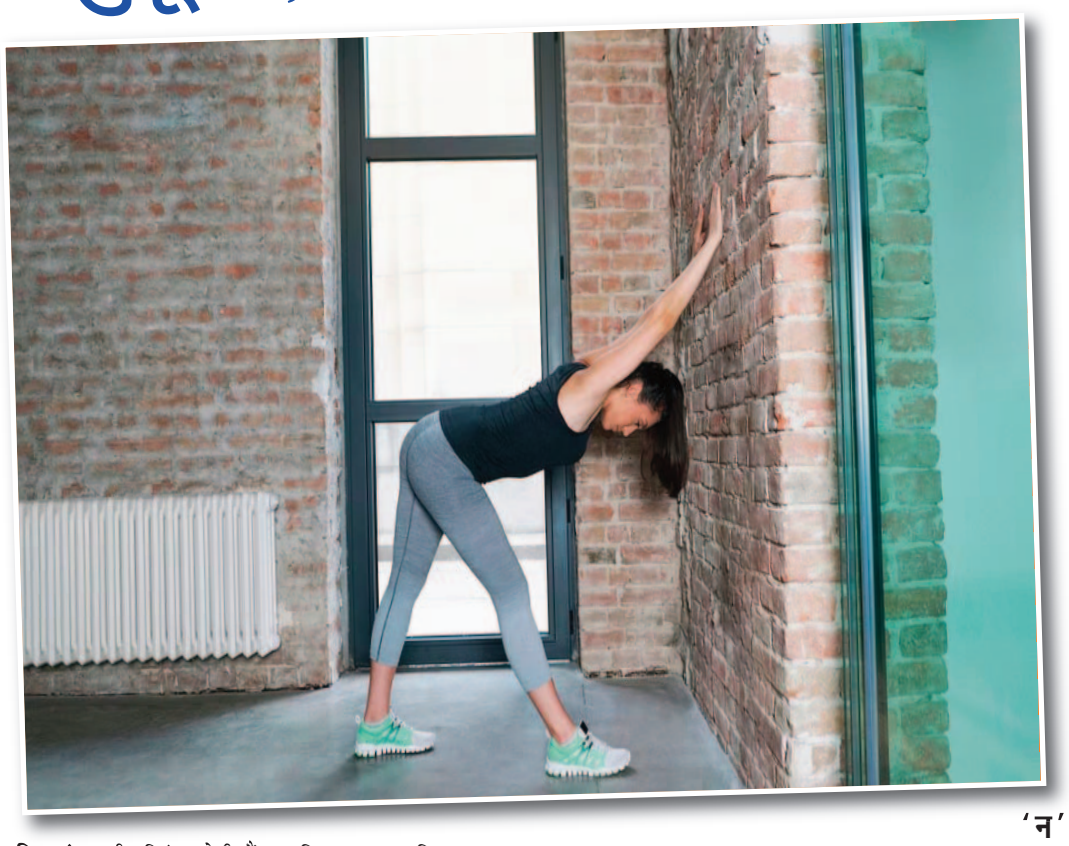

महिलाएं मल्टीटास्किंग होती हैं, इसलिए उनका मस्तिष्क अत्यधिक काम करता है। यदि आपको भी ऐसा लगता है तो इसका मतलब है कि आपका दिमाग लाल झंडी दिखा रहा है और आपसे कुछ जगह खाली करने की मांग कर रहा है। अलमारियों की तरह हमारे दिमाग को भी समय-समय पर साफ-सफाई की जरूरत होती है। प्रेरक और कुशल बने रहने के लिए सभी गैर-जरूरी मानसिक बोझ से छुटकारा पाना जरूरी है।

दिमाग को शांत रखने के लिए कुछ सरल, मगर बेहद प्रभावी युक्तियां मौजूद हैं। सुकून के पल जीने और मानसिक बोझ से बचने के लिए महिलाएं विभिन्न प्रकार के कामों को अपने जीवन में शामिल कर सकती हैं। याद रखें, हर किसी का सफर अनोखा होता है और आप अपनी परिस्थिति के अनुसार इन तरीकों का पालन कर अपनी मुश्किलें कम कर सकती हैं।

प्राकृतिक मूड बूस्टर

मानसिक परेशानी से बचने के लिए आप खुद को भी समय दें। ऐसी गतिविधियों को प्राथमिकता दें, जो आराम को बढ़ावा देती हैं, जैसे कि ध्यान, योग और हल्के व्यायाम। नियमित व्यायाम से कई मानसिक स्वास्थ्य लाभ होते हैं। शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने से एंडोर्फिन रिलीज होता है, जो प्राकृतिक मूड बूस्टर है। अपने रोजमर्रा की दिनचर्या में रचनात्मक कार्यों को भी शामिल करें। खुद को लेखन, पेंटिंग, नृत्य और संगीत में लगाए रखें। इससे तनाव कम होता है।

कहना सीखें

सीमाएं निर्धारित करना सीखें और आवश्यकता पड़ने पर 'न' कहना सीखें। यह आपकी मानसिक और भावनात्मक ऊर्जा को संरक्षित करेगा। इसके अलावा अपने विचारों और भावनाओं के प्रति आलोचनात्मक न होकर खुद को शांत रखें। अपने समय को प्रभावी ढंग से मैनेज करने के लिए कार्यों की सूची बनाएं। डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करें। इससे हर तरह के हालात पर नियंत्रण को बढ़ावा मिलेगा और तनाव कम होगा।

एक सपोर्ट नेटवर्क

मित्रों, परिवार या साथियों के साथ एक सपोर्ट नेटवर्क से जुड़ें। अपनी मुश्किलों को दूसरों के साथ साझा करने से मानसिक बोझ कम होता है और मार्गदर्शन भी प्राप्त होता है। अपने आस-पास ऐसे सकारात्मक और सहयोगियों को रखें, जो आपको आगे बढ़ने मदद करें और प्रेरित करें। जीवन के सकारात्मक पहलुओं को याद करते हुए सहयोगियों का आभार भी जताएं। इससे संतुष्टि और शांति मिलेगी।

तकनीक से दूरी

सूचनाओं के मकड़जाल से बचने के लिए सोशल मीडिया से ब्रेक लें। समाचारों, सूचनाओं और ऑनलाइन खबरों के लगातार संपर्क में रहने से मानसिक थकान हो सकती है।

'न'

क्या गर्मियों में कोल्ड ड्रिंक पीने से पेट की समस्याएं हो सकती हैं? जानें सच्चाई

गर्मियों के दौरान ठंडे पेय पदार्थ का सेवन करना कई लोगों को पसंद होता है, खास तौर पर कोल्ड ड्रिंक का। हालांकि, कुछ लोग मानते हैं कि गर्मी के दौरान कोल्ड ड्रिंक पीने से पेट की समस्याएं हो सकती हैं। क्या वाकई ऐसा होता है? इस लेख में हम इसी भ्रम की सच्चाई जानेंगे और समझेंगे कि क्या वास्तव में कोल्ड ड्रिंक का सेवन करने से पेट की समस्याएं होती हैं या यह सिर्फ एक गलत धारणा है।

कोल्ड ड्रिंक में मौजूद तत्व

कोल्ड ड्रिंक में ज्यादा मात्रा में चीनी और नकली फ्लेवर होते हैं, जो सेहत के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इन तत्वों के कारण वजन बढ़ना, शुगर यानि मधुमेह की बीमारी का खतरा और दांतों की समस्याएं हो सकती हैं। हालांकि, ये समस्याएं सीधे तौर पर पेट की समस्याओं से जुड़ी नहीं होतीं। अगर आप सीमित मात्रा में कोल्ड ड्रिंक का सेवन करते हैं तो इससे पेट की समस्याएं नहीं होतीं।

ठंडा पानी बनाम कोल्ड ड्रिंक

कुछ लोग मानते हैं कि ठंडा पानी भी पेट की समस्याओं का कारण बन सकता है। हालांकि, ठंडा पानी पीने से पाचन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता। ठंडा पानी पीने से पेट में कोई खास फर्क नहीं पड़ता। अगर आप ठंडा पानी पीते हैं तो इससे आपके शरीर को हाइड्रेशन मिलेगा और गर्मी का असर भी काफी हद तक कम हो जाएगा। हालांकि, कोल्ड ड्रिंक से डिहाइड्रेशन होने का डर होता है।

पाचन पर असर

कोल्ड ड्रिंक का सेवन करने से पाचन पर असर पड़ सकता है। कोल्ड ड्रिंक पीने से पेट की दीवारों पर असुविधा हो सकती है, जिससे गैस या अपच की समस्या खड़ी हो सकती है। कुछ मामलों में यह समस्या थोड़ी देर बाद सामान्य हो जाती है। हालांकि, अगर जलन और असुविधा बनी रहे तो आपको तुरंत डॉक्टर से परामर्श करना चाहिए। ज्यादा मात्रा में कोल्ड ड्रिंक पीने से ही ऐसा होता है।

सेहत पर प्रभाव

अगर आप नियमित रूप से ज्यादा मात्रा में कोल्ड ड्रिंक का सेवन करते हैं तो इससे सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है। ज्यादा मात्रा में चीनी और नकली फ्लेवर होने के कारण यह पेय नुकसानदायक बन जाता है, जो वजन बढ़ने और पेट की समस्याओं का कारण बन सकता है। इसके अलावा इनमें कैफीन होने की वजह से ये कई अन्य समस्याएं भी खड़ी कर सकते हैं। कोल्ड ड्रिंक पीने से नींद उड़ती है और दांत खराब होते हैं।

अब यूपीआई से सीधे बैंक खाते में आएगा पीएफ का पैसा, ईपीएफओ 3.0 की टेस्टिंग पूरी

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) अपने सब्सक्राइबर्स के लिए एक बेहद क्रांतिकारी और हाईटेक डिजिटल प्लेटफॉर्म 'ईपीएफओ 3.0' लॉन्च करने की पूरी तैयारी कर चुका है। इस नए सिस्टम के लाइव होने के बाद पीएफ सदस्यों को अपने फंड तक बेहद तेज और आसान पहुंच मिलेगी। सबसे बड़ा और ऐतिहासिक बदलाव यह होने जा रहा है कि अब पीएफ सदस्यों को यूपीआई के माध्यम से सीधे अपने बैंक अकाउंट में पीएफ का पैसा ट्रांसफर करने की आधुनिक सुविधा मिलेगी।

इस कदम से न केवल कागजी कार्रवाई खत्म होगी, बल्कि क्लेम प्रोसेसिंग का समय भी घटकर चंद मिनटों का रह जाएगा। हालांकि, इस बेहद सुविधाजनक अपडेट के बीच देश के 7 करोड़ से ज्यादा ईपीएफओ सदस्य इस बात को लेकर असमंजस में हैं कि वे नए नियमों के तहत अपने अकाउंट से अधिकतम कितनी राशि निकाल सकते हैं और क्या पूरा पैसा एक बार में निकाला जा सकता है? आइए जानते हैं ईपीएफओ 3.0 के तहत निकासी के नए और सटीक नियम क्या हैं।

क्या अकाउंट से निकाला जा सकता है पूरा पैसा?

प्रस्तावित ईपीएफओ 3.0 के तहत, तय नियमों और शर्तों के आधार पर सब्सक्राइबर्स को यूपीआई या यूपीआई-इनेबल्ड एटीएम के माध्यम से अपने कुल ईपीएफ फंड का 50 प्रतिशत से लेकर 75 प्रतिशत तक ही निकालने की अनुमति दी जाएगी। ईपीएफओ सामान्य परिस्थितियों में रिटायरमेंट से पहले पूरी राशि निकालने की इजाजत नहीं देता है और आगे भी पूरा अमाउंट एक साथ मिलने की उम्मीद नहीं है। इसके पीछे मुख्य वजह यह है कि पीएफ का एक हिस्सा अनिवार्य रूप से भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जाता है, ताकि रिटायरमेंट के बाद कर्मचारी का बुढ़ापा आर्थिक रूप से सुरक्षित रह सके।

ईपीएफओ 3.0 के तहत निकासी के मुख्य नियम

अनिवार्य न्यूनतम शेष राशि : नए नियमों के मुताबिक, किसी भी आपात स्थिति में डिजिटल विड्रॉल करते समय ईपीएफ खाते में जमा कुल राशि का कम से कम 25 प्रतिशत हिस्सा अनिवार्य रूप से खाते में ही छोड़ना होगा। इस नियम का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आपकी भविष्य की बचत पूरी तरह से शून्य न हो जाए।

ऑटोमैटिक सेल्फ सेटलमेंट लिमिट बढ़ी: ईपीएफओ ने एडवांस क्लेम (अग्रिम दावों) के लिए 'सेल्फ सेटलमेंट' की सीमा को 1 लाख रुपये से सीधे बढ़ाकर 5 लाख रुपये कर दिया है। इसका सीधा मतलब यह है कि अगर आपका पात्र दावा 5 लाख रुपये तक का है, तो वह बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के बेहद कम समय में ऑटोमैटिक तरीके से पास होकर आपके खाते में आ जाएगा।

केवल इन विशेष परिस्थितियों में ही निकाल सकेंगे एडवांस फंड

यूपीआई आधारित इस डिजिटल सुविधा के जरिए आप जब चाहें तब पैसा नहीं निकाल पाएंगे। इसके लिए विभाग ने कुछ विशेष और आपातकालीन परिस्थितियां तय की हैं। सदस्य केवल मेडिकल इमरजेंसी (स्वास्थ्य संकट), बच्चों की हायर एजुकेशन (उच्च शिक्षा), खुद की या भाई-बहन/बच्चों के विवाह के खर्चे, और नया घर खरीदने या बनवाने जैसी जरूरी आवश्यकताओं के लिए ही इस फंड को एडवांस के रूप में निकाल सकेंगे।

जानिए कब लॉन्च होगा बहुप्रतीक्षित श्वक्कस्नह 3.0?

केंद्रीय श्रम मंत्री मनसुख मांडविया ने हाल ही में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान देश को खुशखबरी देते हुए बताया कि यूपीआई आधारित इस विड्रॉल सिस्टम की तकनीकी टेस्टिंग का काम सफलतापूर्वक पूरा किया जा चुका है। केंद्रीय मंत्री ने स्पष्ट किया कि परीक्षण के दौरान सिस्टम पूरी तरह सुरक्षित और सटीक पाया गया है, जिसके माध्यम से निकाला गया पैसा सीधे सदस्य के लिंक बैंक खाते में ट्रांसफर हो जाता है। उम्मीद जताई जा रही है कि अगले कुछ ही हफ्तों में इस बेहतरीन सुविधा को देश के करोड़ों नौकरीपेशा कर्मचारियों के लिए आधिकारिक तौर पर शुरू कर दिया जाएगा।

क्या आप बनवा सकते हैं आयुष्मान कार्ड? चेक करें पात्रता और कार्ड की लिमिट भी जानें

अगर आपको भी आयुष्मान कार्ड बनवाना है तो पहले अपनी पात्रता जरूर चेक कर लें, ताकि आपको पता चल सके कि आपका आयुष्मान कार्ड बन सकता है या नहीं।

सरकार कई सारी योजनाओं के जरिए अलग-अलग वर्गों को लाभ देने का काम करती है। आप भी अगर किसी योजना के लिए पात्र हैं तो लाभ ले सकते हैं। जैसे, प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत योजना के जरिए सरकार उन लोगों को मुफ्त इलाज का लाभ देती है जो इस योजना के लिए पात्र होते हैं।

भारत सरकार की इस योजना के तहत आपको मुफ्त इलाज का लाभ मिलता है जिसके लिए पहले पात्र लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाए जाते हैं। अगर आप भी इस योजना के लिए पात्र हैं तो आप आयुष्मान कार्ड बनवाकर लाभ ले सकते हैं। तो चलिए जानते हैं क्या आपका आयुष्मान कार्ड बन सकता है या नहीं। अगली स्लाइड्स में आप पात्रता के बारे में जान सकते हैं और साथ ही ये भी जान सकते हैं कि आयुष्मान कार्ड की लिमिट क्या होती है। चलिए जानते हैं इस बारे में...

कैसे चेक करें पात्रता?

स्टेप 1

अगर आपको आयुष्मान कार्ड बनवाना है तो आपको पहले अपनी पात्रता चेक करनी होती है

इसके लिए आप योजना के इस आधिकारिक लिंक https://pmjay.gov.in/ पर जाना है

आप चाहें तो योजना की आधिकारिक एप पर भी जा सकते हैं

स्टेप 2

इसके बाद आपको यहां पर 'Am I Eligible' वाला ऑप्शन मिलेगा

फिर आपको यहां पर अपना मोबाइल नंबर भरना है

साथ ही आपको बाकी मांगी गई जानकारियां यहां पर भरनी हैं

आयुष्मान कार्ड की लिमिट

अगर आप आयुष्मान कार्ड बनवा लेते हैं तो आप इस कार्ड से मुफ्त इलाज करवा सकते हैं। आयुष्मान कार्ड में आपको सालाना 5 लाख रुपये तक की लिमिट मिलती है यानी कार्डधारक आयुष्मान कार्ड से साल भर में 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज करवा सकता है। इसका खर्च सरकार उठाती है।

इन अस्पतालों में मुफ्त इलाज

आप आयुष्मान कार्ड बनवा चुके हैं तो आप इससे मुफ्त इलाज करवा सकते हैं। ये इलाज उन अस्पताल में होता है जो इस योजना में पंजीकृत हैं। इसमें कई प्राइवेट और सरकारी अस्पताल शामिल हैं। आप योजना के इस आधिकारिक लिंक https://hospitals.pmjay.gov.in/Search / पर जाकर ये चेक कर सकते हैं आपके शहर का कौन सा अस्पताल इस योजना में रजिस्टर्ड है।

आयुष्मान कार्ड का फायदा

अगर आप आयुष्मान कार्ड बनवा चुके हैं या बनवाने वाले हैं तो जान लें कि इस कार्ड की सालाना लिमिट 5 लाख रुपये होती है। ऐसे में आप इस आयुष्मान कार्ड से हर साल 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज करवा सकते हैं जिसका खर्च सरकार उठाती है।

'दबाव बढ़ेगा तो पुतिन करेंगे बातचीत', जेलेंस्की की रूस पर और कड़े प्रतिबंध लगाने की मांग

कीव, एजेंसी। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने एक बार फिर दुनिया के देशों से रूस पर दबाव बढ़ाने की अपील की है। उनका कहना है कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को शांति वार्ता की मेज तक लाने के लिए और कड़े प्रतिबंध तथा अंतरराष्ट्रीय दबाव की जरूरत है। रूस-यूक्रेन युद्ध अब अपने पांचवें वर्ष में प्रवेश कर चुका है और जेलेंस्की लगातार युद्ध समाप्त करने के लिए नए कूटनीतिक रास्ते तलाश रहे हैं। एक इंटरव्यू में जेलेंस्की ने कहा कि आने वाले छह महीनों में अगर यूक्रेन युद्धक्षेत्र में महत्वपूर्ण सफलता हासिल करता है, तो भविष्य की किसी भी शांति वार्ता में उसकी स्थिति काफी मजबूत हो सकती है। उन्होंने कहा कि सर्दियों के आने से पहले किसी न किसी तरह कूटनीतिक रास्ता निकालकर बातचीत शुरू करनी होगी। उनका मानना है कि युद्ध को केवल सैन्य ताकत से नहीं बल्कि बातचीत के जरिए भी खत्म किया जा सकता है। इस बीच, अमेरिकी थिंक टैंक इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ वॉर (आईएसडब्ल्यू) की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि युद्ध के मोर्चे पर हालात धीरे-धीरे यूक्रेन के पक्ष में बदलते दिखाई दे रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार रूसी सेना की बढ़त की गति धीमी पड़ रही है, जबकि यूक्रेनी सेना नई रणनीतियों और आधुनिक युद्ध तकनीकों का इस्तेमाल कर रही है। हालांकि विशेषज्ञों ने यह भी कहा कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि यूक्रेन पूरी तरह से युद्ध का रुख बदल पाएगा या नहीं। जेलेंस्की ने अमेरिका से अतिरिक्त सैन्य सहायता की भी मांग की है। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और अमेरिकी कांग्रेस को पत्र भेजकर पैट्रियट मिसाइल रक्षा प्रणाली के लिए और इंटरसेप्टर मिसाइलें उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है। यह मांग उस समय की गई जब रूस ने हाल ही में कीव पर बड़े पैमाने पर मिसाइल और ड्रोन हमला किया। यूक्रेन का कहना है कि मौजूदा उत्पादन क्षमता उसकी जरूरतों के मुकाबले बहुत कम है और पैट्रियट मिसाइलों की आपूर्ति बढ़ाई जानी चाहिए। अमेरिका के युद्ध सचिव पीट हेगसेथ ने कहा कि अमेरिका अपनी रक्षा उत्पादन क्षमता बढ़ाने पर काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि हथियार और मिसाइल बनाने वाली कंपनियों को अधिक उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है ताकि यूक्रेन और उसके सहयोगियों की जरूरतें पूरी की जा सकें। हेगसेथ ने यह भी कहा कि यूरोपीय देशों ने भी यूक्रेन की मदद के लिए काफी संसाधन उपलब्ध कराए हैं और अमेरिका इस सहयोग का स्वागत करता है। आईएसडब्ल्यू ने चेतावनी दी है कि यूक्रेन के पास वर्तमान परिस्थितियों का फायदा उठाने के लिए सीमित समय है। संस्था का मानना है कि रूस इस समय युद्धक्षेत्र में कई चुनौतियों का सामना कर रहा है और यदि पश्चिमी देश अपनी सहायता बढ़ाते हैं तो यूक्रेन को महत्वपूर्ण रणनीतिक लाभ मिल सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि रूस पर बढ़ता सैन्य और आर्थिक दबाव पुतिन को अपनी रणनीति पर दोबारा विचार करने के लिए मजबूर कर सकता है। कूटनीतिक मोर्चे पर अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने स्वीकार किया कि फिलहाल शांति वार्ता की प्रक्रिया धीमी पड़ गई है। हालांकि उन्होंने कहा कि यदि बातचीत के लिए कोई नया अवसर पैदा होता है तो अमेरिका फिर से सक्रिय भूमिका निभाने को तैयार रहेगा। जेलेंस्की ने विश्वास जताया कि रूस अंततः किसी न किसी समझौते के लिए तैयार हो सकता है। उन्होंने कहा कि अतीत में अमेरिका की भागीदारी के साथ हुई बातचीत भविष्य की वार्ताओं का आधार बन सकती है। यूक्रेनी राष्ट्रपति ने अमेरिकी अधिकारियों मार्को रुबियो, स्टीव विटकॉफ और जेरेड कुशनर को कीव आने का निमंत्रण भी दिया है। उनका कहना है कि अमेरिकी प्रतिनिधियों को यूक्रेन आकर खुद हालात देखने चाहिए ताकि वे युद्ध की वास्तविक स्थिति को बेहतर ढंग से समझ सकें। व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने पुष्टि की है कि इस तरह की यात्रा पर चर्चा हुई है।

'लेबनान पर हमले रोके इस्राइल', ब्रिटेन ने हिजबुल्ला से भी की हथियार छोड़ने की मांग

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन की गृह सचिव यवेट कूपर ने लेबनान में इस्राइल की सैन्य कार्रवाई को तत्काल रोकने की मांग की है। इसके साथ ही उन्होंने हिज्बुल्ला से पूर्ण रूप से हथियार छोड़ने और इस्राइल के खिलाफ हमले बंद करने का भी आग्रह किया है। यवेट कूपर ने एक्स पर जारी एक संदेश में पश्चिम एशिया क्षेत्र में बढ़ती हिंसा पर चिंता जताते हुए कहा, 'इस्राइल की लेबनान में सैन्य बढ़ोतरी से नागरिकों की मौत हुई है, लोग विस्थापित हुए हैं, बुनियादी ढांचा तबाह हुआ है और कूटनीति के लिए जगह कम हुई है। इसे समाप्त होना चाहिए।'उन्होंने कहा कि सभी पक्षों को युद्धविराम का सम्मान करना चाहिए और ईमानदारी से बातचीत की प्रक्रिया में शामिल होना चाहिए। इस बीच अरब लीग के महासचिव अहमद अबुल गैत ने भी लेबनान में इस्राइल की कार्रवाई की आलोचना करते हुए इसे क्रूर आक्रामकता बताया और संघर्ष तत्काल रोकने की मांग की।

अहमद अबुल गैत ने कहा कि इस्राइली बल लेबनानी क्षेत्र में आगे बढ़े हैं। दक्षिणी गांवों और ऐतिहासिक स्थलों को नुकसान पहुंचाया गया है। इसके साथ ही नागरिकों को निशाना बनाए जाने से बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ है। उनके अनुसार यह लेबनान की संप्रभुता और अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है। अबुल गैत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से हस्तक्षेप कर इस्राइल की सैन्य कार्रवाई रुकवाने और सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 1701 को पूरी तरह लागू कराने की मांग की।

लेबनान में इस्राइल के जमीनी अभियान से बढ़ी चिंता

जर्मनी ने भी दक्षिणी लेबनान में इस्राइल के जमीनी अभियान के विस्तार पर चिंता जताई है। जर्मन विदेश मंत्री जोहान वाडेफुल ने कहा कि 'दक्षिणी लेबनान में इस्राइली सेना की आगे बढ़त गंभीर चिंता का विषय है।' उन्होंने कहा कि किसी भी अतिरिक्त सैन्य बढ़ोतरी से पहले से तनावपूर्ण हालात और बिगड़ेंगे। इससे नए सिरे से विस्थापन की स्थिति पैदा होगी। ब्रिटेन के मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका मामलों के मंत्री हैमिश फाल्कनर ने भी कहा कि लेबनान में लगातार बढ़ता संघर्ष कूटनीतिक प्रयासों को कमजोर कर रहा है और नागरिकों पर अस्वीकार्य प्रभाव डाल रहा है। उन्होंने कहा, 'हिजबुल्ला को इस्राइल पर हमले बंद करने चाहिए और निरस्त्रीकरण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। सभी पक्षों को युद्धविराम का पालन करना चाहिए और अमेरिका की अगुवाई वाली वार्ता जारी रखनी चाहिए।'

होर्मुज में अमेरिकी सेना का बड़ा एक्शन : अब तक 118 व्यापारिक जहाज खदेड़े, पांच को किया पंगु

वॉशिंगटन, एजेंसी। पश्चिम एशिया के समंदर में तनाव बहुत बढ़ गया है। अमेरिकी सेना ने ईरान के बंदरगाहों को पूरी तरह घेर लिया है। अमेरिकी सैन्य कमान (सेंटकॉम) ने रविवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इसकी जानकारी दी। अमेरिकी सेना ने ईरान जाने और वहां से आने वाले 118 व्यापारिक जहाजों का रास्ता बदल दिया है। यही नहीं, अमेरिकी सेना की बात न मानने वाले पांच जहाजों को पूरी तरह अपाहिज यानी निष्क्रिय कर दिया गया है।

अमेरिका ने ईरान की यह नौसैनिक नाकेबंदी 13 अप्रैल को शुरू की थी। अमेरिकी सेना ने साफ चेतावनी दी है। वे ईरान के बंदरगाहों की तरफ आने-जाने वाले सभी जहाजों को रोकते रहेंगे। हैरत की बात यह है कि कार्रवाई तब हो रही है जब दोनों देश शांति की राह पर आने के लिए बातचीत भी कर रहे हैं।

ट्रंप ने पलटी बाजी, शर्तें कीं और कड़ी

कुछ दिन पहले राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि समझौता लगभग तय है। लेकिन अब मामला अटक गया है। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रंप ने अपने सलाहकारों के साथ दो घंटे बैठक की। इसके बाद ट्रंप ने समझौते का ड्राफ्ट वापस कर दिया। ट्रंप अब इस समझौते में और ज्यादा कड़ी शर्तें चाहते हैं। ट्रंप चाहते हैं कि ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर सख्ती बरती जाए। वे स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के रास्ते को हमेशा खुला रखने की गारंटी चाहते हैं। ट्रंप ईरान को कोई आर्थिक राहत देने के पक्ष में नहीं हैं। वे ओबामा के समय हुए समझौते जैसी नरमी नहीं बरतना चाहते। ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका ईरान के समृद्ध यूरेनियम को जब्त कर नष्ट करेगा। वहीं ईरान इस पर बात करने को भी तैयार नहीं है।

ईरान का दो टूक जवाब-हम नहीं झुकेंगे

ईरान ने भी अमेरिका के सामने झुकने से साफ मना कर दिया है। तस्नीम न्यूज एजेंसी के मुताबिक, ईरान के संसद अध्यक्ष मोहम्मद बागेर गालिबाफ ने कहा कि जब तक उनके अधिकार सुरक्षित नहीं होंगे, वे कोई समझौता नहीं मानेंगे। उन्होंने कहा कि हमें दुश्मन के वादों पर बिल्कुल भरोसा नहीं है। हमें ठोस नतीजे चाहिए। दूसरी तरफ अमेरिकी सीनेटर क्रिस कून्स का कहना है कि ट्रंप की शर्तें कागजों पर अच्छी हैं, लेकिन इन्हें जमीन पर लागू करना बहुत मुश्किल होगा।

माउंट रशमोर में जगह पाने की चाह, अमेरिकी राष्ट्रपति ने शेयर की एआई से बनी तस्वीर

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर माउंट रशमोर में अपनी जगह बनाने की बहस को हवा दे दी है। ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रूथ सोशल पर एक एआई से तैयार की गई तस्वीर साझा की है, जिसमें उनका चेहरा अमेरिका के चार ऐतिहासिक राष्ट्रपतियों के साथ माउंट रशमोर स्मारक पर दिखाई दे रहा है। इस तस्वीर में ट्रंप को जॉर्ज वॉशिंगटन, थॉमस जेफरसन, थियोडोर रूजवेल्ट और अब्राहम लिंकन के साथ दिखाया गया है। खास बात यह रही कि ट्रंप ने इस तस्वीर के साथ कोई टिप्पणी या संदेश साझा नहीं किया।

माउंट रशमोर नेशनल मेमोरियल दक्षिण डकोटा के कीस्टोन स्थित ब्लैक हिल्स क्षेत्र में ग्रेनाइट चट्टानों पर उकेरा गया एक विशाल स्मारक है। यहां अमेरिका के चार पूर्व

राष्ट्रपतियों के 60 फुट ऊंचे चेहरे तराशे गए हैं। यह स्मारक अमेरिका के जन्म, क्षेत्रीय विस्तार, आर्थिक प्रगति और लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थिरता का प्रतीक माना जाता है।

स्मारक के मूर्तिकार ने कैसे किया था राष्ट्रपतियों का चयन?

स्मारक के मूल मूर्तिकार गुटजोन बोर्ग्लम ने इन चार राष्ट्रपतियों का चयन अमेरिका के पहले 150 वर्षों के इतिहास को दर्शाने के उद्देश्य से किया था। जॉर्ज वॉशिंगटन को अमेरिकी गणराज्य की स्थापना और स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक माना गया, जबकि थॉमस जेफरसन देश के क्षेत्रीय विस्तार का प्रतिनिधित्व करते हैं। थियोडोर रूजवेल्ट को राष्ट्रीय विकास और वैश्विक मंच पर अमेरिका के उभार के प्रतीक के रूप में शामिल किया गया था। वहीं, अब्राहम लिंकन को अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए सम्मानित किया गया।

ट्रंप की इच्छा पहली बार नहीं जगी?

माउंट रशमोर में ट्रंप के चेहरे को शामिल करने का विचार पहली बार 2018 में चर्चा में आया था। उस समय ट्रंप ने दक्षिण डकोटा की तत्कालीन गवर्नर क्रिस्टी नोएम से कथित तौर पर कहा था कि माउंट रशमोर पर अपना चेहरा देखना उनका 'सपना' है। इसके बाद से ट्रंप लगातार इस विचार का समर्थन करते रहे हैं और उनका तर्क रहा है कि उनके प्रशासन की उपलब्धियां उन्हें इस ऐतिहासिक स्मारक में शामिल किए जाने योग्य बनाती हैं। वर्ष 2020 में ट्रंप ने एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान भी इस प्रस्ताव का उल्लेख किया था। इसके अलावा, अमेरिकी कांग्रेस में उनके समर्थकों ने इस दिशा में औपचारिक प्रयास भी किए हैं। फ्लोरिडा से रिपब्लिकन सांसद अन्ना पॉलिना लूना ने ऐसा विधेयक पेश किया था, जिसमें अमेरिकी आंतरिक विभाग को माउंट रशमोर पर ट्रंप की आकृति उकेरने की प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश देने की मांग की गई थी।

ट्रंप की चाह को मिला है समर्थन

ट्रंप को माउंट रशमोर में शामिल करने की चर्चा को प्रशासन के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों का भी समर्थन मिलता रहा है। अमेरिकी आंतरिक मंत्री डग बर्गम सहित कई अधिकारियों ने सार्वजनिक रूप से संकेत दिया है कि स्मारक में एक अतिरिक्त चेहरा जोड़ने के लिए पर्याप्त जगह उपलब्ध हो सकती है। हालांकि, इस दिशा में अब तक कोई आधिकारिक निर्णय नहीं लिया गया है।

देश में खत्म हुआ हीटवेव का प्रकोप, बारिश के बाद तापमान में आई गिरावट

नई दिल्ली। देश में मौसम का मिजाज एक बार फिर बदला हुआ दिखा। रविवार को कई हिस्सों में बारिश होने के बाद तापमान में गिरावट दर्ज की गई। मौसम विभाग का कहना है कि फिलहाल देशभर में हीटवेव की स्थिति लगभग खत्म हो गई है। कई राज्यों में बारिश और आंधी के बाद मौसम में बदलाव आया है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, बिहार, पंजाब और हरियाणा के कई इलाकों में बारिश हुई। उत्तर प्रदेश के बलिया में 34.4 एमएम और मुरादाबाद में 21.8 एमएम बारिश हुई तो लखनऊ में 2.4 एमएम बारिश दर्ज की गई। लखनऊ में अधिकतम तामपान 36.3 डिग्री सेल्सियस रहा जो सामान्य से 3.9 डिग्री सेल्सियस कम है। राजस्थान के कई हिस्सों में लगातार दूसरे दिन धूल भरी आंधी चली, जिससे तापमान में गिरावट आई। जैसलमेर में रेतीला तूफान आया। इससे विजिबिलिटी पर असर हुआ, हालांकि किसी तरह का नुकसान नहीं हुआ। राज्य के फलौदी में अधिकतम तापमान 42.6C रहा। इससे पहले शनिवार दोपहर 3 बजे राजस्थान के 5 जिलों श्रीगंगानगर, बीकानेर, चूरू, हनुमानगढ़ और सीकर में रेतीला तूफान आया था। इसका असर करीब 200 वर्ग किलोमीटर के इलाके में रहा। रेतीले तूफान की शुरुआत हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर से हुई थी। इस दौरान 56kmph की रफ्तार से आंधी चली।

उत्तराखंड में रोकनी पड़ी केदारनाथ यात्रा

उत्तराखंड में भारी बारिश और खराब मौसम के कारण केदारनाथ यात्रा को अस्थायी रूप से रोकना पड़ा। चंपावत के श्री रीठा साहिब गुरुद्वारे के वार्षिक जोड़ मेले के दौरान उफनती नदी में 50 से ज्यादा श्रद्धालु फंस गए, जिन्हें बाद में रेस्क्यू किया गया।

अगले दो दिन कैसा रहेगा मौसम

दो जून को पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, झारखंड और राजस्थान के कुछ हिस्सों में 40 से 50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चल सकती है। महाराष्ट्र और कर्नाटक के कुछ इलाकों में भी तेज हवा चलने और बिजली गिरने की आशंका है। तमिलनाडु, पुडुचेरी, केरलम और कर्नाटक में कई जगहों पर बारिश का अनुमान जताया गया है। कुछ इलाकों में भारी बारिश भी हो सकती है। असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में भी बारिश और आंधी-तूफान का दौर जारी रहने की संभावना है।

सुप्रीम कोर्ट ने दिया 298 पन्नों का फैसला

'कोई महिला आजीविका के लिए वेश्यावृत्ति करे, तो वह जगह कोठा नहीं'

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने 70 साल पुराने अनैतिक व्यापार निवारण अधिनियम का गहन विश्लेषण करने के बाद एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। अदालत ने कहा कि इस कानून का मुख्य उद्देश्य न तो वेश्यावृत्ति को पूरी तरह से खत्म करना है और न ही इसे आपराधिक अपराध बनाना है, बल्कि इसका असली मकसद वेश्यावृत्ति के व्यावसायीकरण पर लगाम लगाना है।

जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और जस्टिस आर. महादेवन की पीठ ने कहा कि हम इस बात को लेकर पूरी तरह आश्वस्त हैं कि वेश्यावृत्ति को खत्म करना या इसे आपराधिक अपराध बनाना इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य नहीं है। बल्कि, इसका उद्देश्य वेश्यावृत्ति के व्यावसायीकरण को रोकना या समाप्त करना है, यानी वेश्यावृत्ति को आजीविका के एक संगठित माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने पर रोक लगाना है।

कानून के नाम में अनैतिक शब्द क्यों जुड़ा?

वेश्यालय से छुड़ाई गई महिलाओं के पुनर्वास के मुद्दे पर सुनवाई करते हुए पीठ ने 1956 के इस अधिनियम का गहराई से विश्लेषण किया। अदालत ने बताया कि 20वीं सदी की शुरुआत में वेश्यावृत्ति के लिए महिलाओं की तस्करी बहुत आम थी और समाज में इसे अनैतिक माना जाता था, यही वजह है कि यह शब्द इस कानून के नाम के साथ जुड़ गया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आईटीपीए मुख्य रूप से अपराधियों और तस्करों को सजा देने के लिए लाया गया था, न कि खुद वेश्यावृत्ति करने वाली महिलाओं को दंडित करने के लिए। जस्टिस पारदीवाला द्वारा लिखे गए 298 पन्नों के इस फैसले में स्पष्ट किया गया कि अधिनियम की धारा 7 और 8 इस सामान्य नियम के अपवाद हैं। ये धाराएं विशेष परिस्थितियों में वेश्यावृत्ति के व्यक्तिगत कृत्यों को दंडित करती हैं कि धारा 7 सार्वजनिक स्थानों के करीब वेश्यावृत्ति में शामिल होने वाले किसी भी व्यक्ति को दंडित करती है। वहीं, धारा 8 सार्वजनिक स्थानों पर ग्राहकों को रिझाने या बुलाने को अपराध मानती है।

पीठ ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा कि हालांकि वेश्यावृत्ति के व्यक्तिगत कृत्यों को सीधे तौर पर पूरी तरह प्रतिबंधित नहीं किया गया है, लेकिन सार्वजनिक शालीनता और सामाजिक नैतिकता को बनाए रखने के लिए यह जरूरी है। सार्वजनिक संस्थानों और अधिसूचित क्षेत्रों के आसपास ऐसे दृश्यों या प्रयासों को रोका जाए ताकि जनता को असुविधा न हो।

वेश्यावृत्ति को लेकर कानूनी अस्पष्टता

अदालत ने स्पष्ट किया कि वह न तो वेश्यावृत्ति को पूरी तरह से अपराध घोषित करने की वकालत कर रही है और न ही इसे पूरी तरह से अनियंत्रित छोड़ने की बात कह रही है। कोर्ट ने कहा कि हम सिर्फ यह समझाना चाहते हैं कि विधायी उद्देश्य वेश्यावृत्ति के सभी कृत्यों की निंदा करना नहीं है। हालांकि, इसकी परिभाषा में कुछ अस्पष्टता जरूर है, क्योंकि इसे पूरी तरह से केवल शोषणकारी या अपमानजनक रूप में ही चित्रित किया जाता है।

अधिनियम की धारा 2 में दिए गए वेश्यागृह शब्द की परिभाषा की जांच करते हुए पीठ ने एक बेहद महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण दिया। कोर्ट ने कहा कि अगर कोई अकेली महिला अपनी आजीविका के लिए अपने घर में वेश्यावृत्ति करती है, जिसमें कोई दूसरी महिला शामिल नहीं है और न ही उस परिसर के रखरखाव में किसी बाहरी व्यक्ति या बिचौलिए की भूमिका है तो उस महिला के निवास स्थान को कानूनन वेश्यागृह नहीं माना जाएगा।

'नीट-यूजी परीक्षा CBT मोड में हो', याचिका पर अदालत का तत्काल सुनवाई से इनकार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने 2026 की नीट-यूजी परीक्षा को कंप्यूटर आधारित मोड के माध्यम से आयोजित करने की मांग वाली याचिका पर तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया है। यह याचिका जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस अरविंद कुमार की आंशिक कार्यदिवस वाली बेंच के समक्ष पेश की गई। कोर्ट ने मामले को अवकाश के बाद सूचीबद्ध किया है। जस्टिस नरसिम्हा ने टिप्पणी की, "वे (एनटीए) परीक्षा को दोबारा आयोजित कर रहे हैं। उन पर कितना दबाव है। हम अवकाश के बाद इस पर चर्चा करेंगे।" सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहा कि आंशिक न्यायिक कार्य दिवसों के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ताओं को न तो मामलों की तत्काल सूचीबद्धता के लिए उल्लेख (मेंटशन) करने की अनुमति दी जाएगी और न ही वे सूचीबद्ध मामलों में बहस कर सकेंगे। शीर्ष अदालत ने कहा कि यह व्यवस्था युवा वकीलों को आंशिक न्यायिक कार्य दिवसों के दौरान अपने मामलों की पैरवी का अवसर देने के लिए की जा रही है। यह अवधि आज से 12 जुलाई तक रहेगी। सुप्रीम कोर्ट की ग्रीष्मकालीन छुट्टियों को अब आंशिक न्यायिक कार्य दिवस नाम दिया गया है। इस दौरान प्रत्येक सप्ताह तीन से चार पीठें न्यायिक कार्य करेंगी। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति पीबी वराले की पीठ ने कार्यवाही शुरू होते ही स्पष्ट किया, 'मेरी अदालत में किसी भी वरिष्ठ अधिवक्ता को अनुमति नहीं दी जाएगी।' जब एक वरिष्ठ अधिवक्ता ने किसी मामले का उल्लेख करने का प्रयास किया तो न्यायमूर्ति नाथ ने कहा कि आंशिक न्यायिक कार्य दिवसों के दौरान उनकी पीठ के समक्ष वरिष्ठ वकीलों को न तो मामलों का उल्लेख करने और न ही बहस करने की अनुमति होगी।

कोई मां-बेटा, तो स्क्रीन पर बना भाई-बहन... टीवी इंडस्ट्री के वो सितारे, जो असल में निकले कपल

टीवी इंडस्ट्री के कुछ ऐसे कपल हैं, जो कि ऑनस्क्रीन पर काफी अलग रिश्ता निभाते हुए देखे गए हैं . लेकिन, असल जिंदगी की बात की जाए, तो वो एक-दूसरे को शो के दौरान ही दिल दे दिया। हालांकि, इनमें से कुछ कपल ने शादी कर ली, लेकिन वहीं कुछ ने अपने रिश्ते को बीच में ही तोड़ दिया।

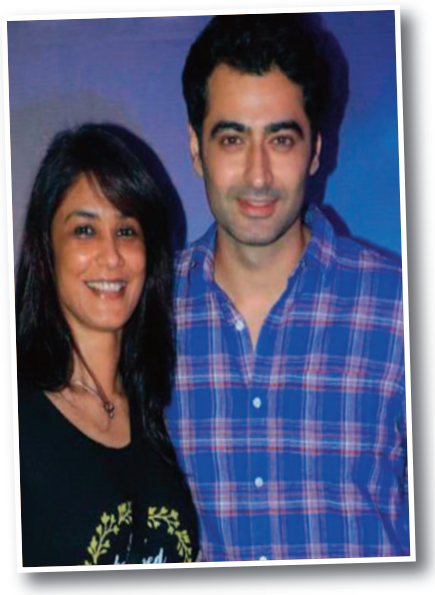

फिल्मी दुनिया हो या फिर टेलिविजन इंडस्ट्री अक्सर ही हमें ऐसे रील लाइफ कपल देखने को मिलते हैं, जो कि असल में भी कपल हैं. ये तो काफी आम रही है, क्योंकि साथ में एक पार्टनर की तरह काम करते-करते ज्यादातर लोगों को लगाव हो जाता है। हालांकि, ऐसे में ही कुछ ऐसे कपल भी है, जिन्होंने स्क्रीन पर तो मां- बेटे, भाई-बहन और देवर-भाभी जैसा किरदार निभाया है, लेकिन जब उनकी असल जिंदगी में देखा गया, तो वो कपल निकले हैं।

हालांकि, ऑडियंस की तरफ से इनमें से कुछ रिश्तों को काफी ट्रोल भी किया गया है। लेकिन, एक वक्त के बाद उन सभी को एक बेहतरीन कपल के तौर पर देखा जाता है। फिलहाल जिन कपल्स की हम बात करने जा रहे हैं, उनमें से कुछ ने अपने रिश्ते को आगे बढ़ाया है। लेकिन कुछ कपल ऐसे भी हैं, जो कि अब अपना रास्ता अलग कर चुके हैं।

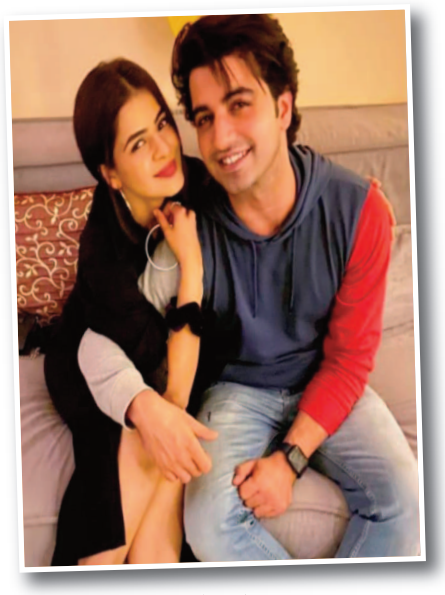

जिज्ञासा सिंह और मेहरजान माजदा

इस लिस्ट में सबसे पहला नाम जिज्ञासा सिंह और मेहरजान माजदा का है। दोनों एक्टर टीवी शो शक्ति-अस्तित्व के एहसास की में थे, इस सीरियल में दोनों एक दूसरे के कजिन के तौर पर नजर आए थे। हालांकि, दोनों के रिश्ते की कंफर्मेशन वैलेंटाइन के मौके पर हुई, जब दोनों को डेट पर स्पॉट किया गया।

किश्वर मर्चेंट और सुयश राय

किश्वर मर्चेंट और सुयश राय का भी नाम इस मामले में काफी फेमस है। दोनों आज के टाइम पर फेमस कपल हैं और उनका एक बेटा भी है। लेकिन, दोनों की लव स्टोरी की बात की जाए, तो ये कहानी प्यार की ये एक कहानी से शुरू हुई थी। ये काफी पॉपुलर शो था, जिसमें इस कपल ने भाई-बहन का किरदार निभाया था।

जीशान खान और रेहाना पंडित

कुमकुम भाग्य फेम जीशान खान का भी नाम काफी फेमस है। वो शो की अपनी को स्टार रेहाना पंडित को डेट कर रहे थे। दोनों ने अपने रिश्ते को ऑफिशियल तौर पर लोगों के सामने ला दिया था। हालांकि, कुछ वक्त बाद ही दोनों ने अपने रास्ते अलग कर लिए। शो के किरदार की बात की जाए, तो रेहाना ने जीशान की मां का रोल निभाया था।

हर्षद अरोड़ा और अपर्णा कुमार

हर्षद अरोड़ा ने भी अपनी को स्टार अपर्णा कुमार को डेट करने को लेकर काफी सुर्खियों में थे। दोनों साथ में मायावी मलिंग में नजर आए थे, इस शो में दोनों मां-बेटे के रिश्ते में थे। हालांकि, दोनों ने साल 2018 में डेट करना शुरू किया था, जिसे उन्होंने 2 साल बाद ही ऑफिशियल कर दिया था। लेकिन बाद में दोनों ने अपने रास्ते अलग कर लिए।

मौली और मजहर

कहीं किसी रोज फेम मौली और मजहर ने भी शो के दौरान ही एक-दूसरे को डेट करना शुरू किया था। हालांकि, दोनों ने शो में भाभी और देवर का किरदार निभाया था। लंबे वक्त तक डेटिंग करने के बाद दोनों ने एक-दूसरे से शादी रचा ली।

कंगना की फिल्म भारत भाग्य विधाता का दमदार मोशन पोस्टर रिलीज, आम लोगों की बहादुरी को किया सलाम

अभिनेत्री कंगना रनौत इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म भारत भाग्य विधाता को लेकर चर्चा में है। इस फिल्म का नया मोशन पोस्टर रिलीज कर दिया गया है, जिसमें कई अनदेखे नायकों को सम्मान दिया गया है। इस मोशन पोस्टर का टाइटल द अनसीन हीरोज रखा गया है। पोस्टर में देश के उन हीरोज को एक ट्रिब्यूट है, जो हमेशा हमारे आसपास रहते हैं। यह उन नर्सों, वार्ड बॉय, क्लीनर्स, लिफ्ट ऑपरेटर्स, सिक्योरिटी स्टाफ और एडमिनिस्ट्रेटर्स को सम्मान देता है, जिन्होंने 2008 के मुंबई टेरर अटैक्स के दौरान हिम्मत दिखाई थी। फिल्म में कंगना रनौत मुख्य भूमिका निभा रही हैं। कहानी का बड़ा हिस्सा अस्पताल से जुड़ा दिखाया गया है, जहां डर और अफरा-तफरी होने के बावजूद अंदर मौजूद लोग हिम्मत और समझदारी से हालात संभालते हैं। फिल्म यह बताने की कोशिश करती है कि संकट के समय इंसानियत सबसे बड़ी ताकत बन सकती है।

कंगना रनौत ने फिल्म को लेकर कहा, भारत भाग्य विधाता उन अनदेखे लोगों को समर्पित है, जो संकट के समय इंसानियत की ढाल बनकर सामने आते हैं। जब कोई बड़ा हादसा या आपदा आती है, तो लोग सबसे पहले पुलिस, सेना या सरकार की तरफ उम्मीद से देखते हैं। लेकिन इस फिल्म में उन लोगों की कहानी दिखाई गई है, जो बिना किसी पहचान या सम्मान की उम्मीद के दूसरों के लिए खड़े हो जाते हैं।

कंगना ने आगे कहा, इस फिल्म में दिखाए गए लोग वे हैं जिनकी वर्दी पर कभी ध्यान नहीं जाता। खून से सने एप्रन पहनने वाले अस्पताल कर्मचारी, साधारण कपड़ों में काम करने वाले लोग और मरीजों की सेवा में लगे कर्मचारी ही असली बहादुर होते हैं। असली साहस किसी मेडल या इनाम का इंतजार नहीं करता। यह अपने आप सामने आ जाता है, जब इंसान दूसरों की जान बचाने के लिए खुद को खतरे में डाल देता है।

फिल्म के प्रेजेंटर और निर्माता डॉ. जयंतीलाल गडा ने भी फिल्म के संदेश पर बात की। उन्होंने कहा, भारत जैसे देश में एक-दूसरे के प्रति अपनापन और संवेदनशीलता को जोड़कर रखा जाता है। जब संकट आता है, तो एक भारतीय खुद-ब-खुद दूसरे भारतीय की मदद के लिए आगे बढ़ता है। यही भावना फिल्म की आत्मा है। भारत भाग्य विधाता उन सच्चाइयों को याद दिलाने की कोशिश है, जिन्हें समय के साथ लोग भूल जाते हैं।

फिल्म के लेखक और निर्देशक मनोज तापड़िया ने कहा, आज के दौर में फिल्मों में गोलीबारी, धमाके और हिंसा दिखाना आसान है लेकिन खामोश बहादुरी को पर्दे पर उतारना सबसे मुश्किल काम होता है। फिल्म में उन छोटे-छोटे पलों को पकड़ने की कोशिश की गई है, जब एक साधारण इंसान अपने डर को पीछे छोड़कर दूसरों की रक्षा करने का फैसला करता है।

फिल्म में कंगना रनौत के अलावा गिरिजा ओक, स्मिता तांबे, अमृता नामदेव, ईशा डे, प्रिया बेर्डे, आशा शेलार, सुहिता थट्टे, रसिका आघासे, आदित्य मिश्रा और जाहिद खान जैसे कलाकार नजर आएंगे।

भारत भाग्य विधाता को डॉ. जयंतीलाल गडा की पेन स्टूडियोज प्रस्तुत कर रही है। फिल्म का निर्माण पेन स्टूडियोज, मणिकर्णिका फिल्म्स, परमहंस क्रिएशंस, यूनोइया फिल्म्स एलएलपी और फ्लोटिंग रॉक्स एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड ने मिलकर किया है। फिल्म को मनोज तापड़िया ने लिखा और निर्देशित किया है। यह फिल्म 12 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com